Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 35 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, मंगलवार 16 जुलाई 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जहां सत्य होता है, वहां अहिंसा होती है और अहिंसा होने पर हमारा जीवन सुरक्षित होता है।

where there is truth there is non-violence and its presence secures our life.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

पुलिस अधीक्षक ने 80 पुलिस कर्मियों के तबादले आदेश जारी किये

बिलासपुर/रायपुर (विसं)। जिले में पुलिस विभाग में बड़ा फेरबदल हुआ है। पुलिस अधीक्षक (एसपी) रजनेश सिंह ने 80 पुलिस कर्मियों के तबादले का आदेश जारी किया है। जिसके अनुसार एसआई, एएसआई और 80 आरक्षकों को इधर से उधर किया गया है।

हाईस्कूल एवं हायर सेकण्डरी द्वितीय मुख्य परीक्षा के प्रवेश पत्र जारी

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल की हाईस्कूल एवं हायर सेकण्डरी द्वितीय मुख्य/अवसर परीक्षा 2024 के प्रवेश पत्र मंडल की वेबसाइट www.cgbse.nic.in एवं संबंधित संस्था के पोर्टल में अपलोड कर दिया गया है।

गोरखपुर एक्सप्रेस में आग लगने से मची अफरातफरी

मुंबई (आरएनएस)। मुंबई में बड़ा रेल हादसा होते होते बचा है। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि सोमवार सुबह महाराष्ट्र के ठाणे जिले में लोकमान्य तिलक टर्मिनस-गोरखपुर एक्सप्रेस के एक कोच में ब्रेक बाइंडिंग के कारण पहियों के पास आग लग गई। मध्य रेलवे (सीआर) के प्रवक्ता ने बताया कि सुबह करीब 6 बजकर 30 मिनट एस-8 कोच के ब्रेक बाइंडिंग के कारण गोरखपुर जाने वाली ट्रेन को ठाकुरली स्टेशन (ठाणे जिले में) के पास रोक दिया गया। एक अधिकारी ने बताया कि आग को तुरंत बुझा दिया गया।

के.पी. शर्मा ओली ने चौथी बार ली नेपाल के प्रधानमंत्री पद की शपथ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने दी बधाई

नेपाल (एजेंसी)। नेपाल में सीपीएन-यूएमएल पार्टी के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली ने आज चौथी बार नेपाल के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। नेपाल की सबसे बड़ी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता को राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने रविवार को नेपाल का प्रधानमंत्री नियुक्त किया। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सीपीएन-यूएमएल के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली को नेपाल का प्रधानमंत्री नियुक्त होने पर बधाई दी और कहा कि वह दोनों देशों के बीच दोस्ती को और मजबूत करने के लिए उनके साथ मिलकर काम करने को लेकर उत्साहित हैं।

ओली को बधाई देते हुए, मोदी ने एक्स पर कहा, दोनों देशों के बीच दोस्ती के गहरे संबंधों को और मजबूत करने और हमारे लोगों की प्रगति और समृद्धि के लिए हमारे पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग को और विस्तारित करने के लिए हम मिलकर काम करने के लिए तत्पर हैं। नेपाल में हाल तक प्रधानमंत्री रहे प्रचंड इसी माह 12 जुलाई को प्रतिनिधि सभा में विश्वास मत हार गए थे। इसके बाद नेपाल में नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू हुई। राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने ओली को नेपाली कांग्रेस गठबंधन सरकार का नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। वह नेपाली संसद की सबसे बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस के समर्थन से प्रधानमंत्री बने हैं।

कांग्रेस ने याद दिलाए मित्रतापूर्ण संबंध : कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से नए प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को शुभकामनाएं देते हुए भारत और नेपाल के बीच मित्रतापूर्ण संबंधों की बात कही है। खड़गे ने कहा कि करीबी पड़ोसियों के रूप में, भारत और नेपाल मित्रता और साझेदारी के अनूठे संबंध साझा करते हैं, जो रिश्तेदारी और संस्कृति के जरिए लोगों के बीच गहरे संपर्कों की विशेषता है।

उज्जैन में बनने जा रहा है देश का सबसे बड़ा मेडिकल डिवाइस पार्क

भोपाल (आरएनएस)। मध्य प्रदेश के उज्जैन की पहचान धार्मिक और आध्यात्मिक नगरी के तौर पर है। लेकिन, आने वाले समय में प्रदेश को नई पहचान मिलने वाली है। यहां देश का सबसे बड़ा मेडिकल डिवाइस पार्क बनेगा। इससे रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने बताया कि मध्य प्रदेश में देश का सबसे बड़ा मेडिकल डिवाइस पार्क उज्जैन के विक्रम उद्योगपुरी में स्थापित होने जा रहा है। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश में औद्योगिक विकास के अंतर्गत अनेक प्रचलित व प्रस्तावित परियोजनाओं पर कार्य जारी है। इसके माध्यम से बाकी गतिविधियों के साथ ही आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी, रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। मुख्यमंत्री के पद की जिम्मेदारी संभालने के बाद से मोहन यादव औद्योगिक विकास पर खास जोर दे रहे हैं। पिछले दिनों उज्जैन में रीजनल कॉन्क्लेव आयोजित किया गया था। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों के बड़े निवेशक पहुंचे थे। इन निवेशकों ने क्षेत्र सहित राज्य के अन्य हिस्सों में निवेश की इच्छा जताई और निवेश के लिए समझौता भी किया।

दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मिले झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन

रांची (एजेंसी)। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। उनकी तस्वीरें पीएमओ के सोशल मीडिया हैंडल पर जारी की गई हैं। हेमंत सोरेन ने भी अपने एक्स अकाउंट पर तस्वीर पोस्ट करते हुए इसे शिष्टाचार मुलाकात बताया है।

माना जा रहा है कि इस मुलाकात के दौरान झारखंड से संबंधित कुछ विषयों पर सामान्य चर्चा हुई है। 4 जुलाई को सीएम पद की शपथ लेने के बाद हेमंत सोरेन की प्रधानमंत्री से यह पहली मुलाकात थी। सोरेन आज राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से भी मिलने वाले हैं। इसके पहले उन्होंने शनिवार को कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी और उसके बाद दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल से मुलाकात की थी। इन मुलाकातों के दौरान उनकी पत्नी और झामुमो की विधायक कल्पना सोरेन भी साथ रहीं। हेमंत सोरेन शनिवार से ही झारखंड से बाहर हैं। उन्होंने रविवार को वाराणसी में बाबा विश्वनाथ मंदिर और विंध्याचल में मां विंध्यवासिनी की पूजा-अर्चना की थी। बता दें कि सोरेन को 31 जनवरी को ईडी ने जमीन घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तार किया था। करीब पांच महीने तक जेल में रहने के बाद 28 जून को उन्हें हाईकोर्ट से जमानत मिली थी। जेल से बाहर आने के बाद सातवें दिन 4 जुलाई को उन्होंने एक बार फिर सीएम पद की शपथ ली।

मुख्यमंत्री से एसबीआई के मुख्य महाप्रबंधक चंद्रशेखर शर्मा ने की मुलाकात

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से आज यहाँ उनके निवास कार्यालय में एसबीआई के मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ सर्कल के मुख्य महाप्रबंधक श्री चंद्रशेखर शर्मा ने सौजन्य मुलाकात की। उन्होंने मुख्यमंत्री को पुष्पगुच्छ और बस्तर आर्ट का प्रतीक चिन्ह भेंट किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने श्री शर्मा से छत्तीसगढ़ में बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि शासकीय योजनाओं का लाभ आम लोगों तक पहुंचाने में बैंकों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। छत्तीसगढ़ राज्य के सुदूर इलाकों खासकर गावों तक बैंक शाखाओं का और अधिक विस्तार हो ताकि दूरस्थ क्षेत्र के अधिक से अधिक ग्रामीण-जन बैंकिंग प्रणाली का हिस्सा बन सकें। चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री श्री साय ने राज्य में वित्तीय समावेशन बढ़ाने और ग्रामीणों को बैंकिंग साक्षरता से जोड़ने पर बल दिया। मुख्यमंत्री को श्री शर्मा ने भारतीय स्टेट बैंक द्वारा इस दिशा में उठाये जा रहे कदमों और आगे की कार्ययोजना के विषय में जानकारी दी। इस अवसर पर उपमहाप्रबंधक रायपुर श्री राकेश कुमार सिन्हा भी उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ विधानसभा का मानसून सत्र 22 जुलाई से, पूछे जाएंगे 900 से ज्यादा सवाल

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के मानसून सत्र में 900 से ज्यादा सवाल पूछे जाएंगे। कांग्रेस बलौदाबाजार आगजनी, खाद-बीज संकट से लेकर सरकार को घेरेगी। वहीं राज्य सरकार की ओर से कई संशोधन विधेयक सदन में पेश हो सकते हैं। हालांकि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के घोटालों की जांच भी सदन में गूंजेंगी। इसके साथ ही वित्तीय वर्ष 2023-24 की महालेखाकर की रिपोर्ट भी सदन में प्रस्तुत की जा सकती है।

गौरतलब है कि प्रदेश में मानसून सत्र 22 जुलाई से शुरु होकर 31 जुलाई तक चलेगा। 10 दिवसीय मानसूत्र सत्र के लिए छत्तीसगढ़ विधानसभा सचिवालय ने तैयारियां शुरू कर दी है। मानसून सत्र के दौरान प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने 24 जुलाई को विधानसभा घेराव का निर्णय लिया है।

कैंसर सर्जरी
पश्चात अंगों का
पुनःनिर्माण
(जबड़ा, स्तन व अन्य)
छ.ग.शासन से मान्यता प्राप्त
कालड़ा बर्न एवं
प्लास्टिक कांसेप्टिक सर्जरी सेंटर
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay 9827144371

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना : किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से फसल नुकसान से मिलेगी राहत

कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेकर योजना का अधिक से अधिक लाभ दिलाने के दिए निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले फसल नुकसान से किसानों को राहत दिलाने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना संचालित की जा रही है। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने कलेक्ट्रेट परिसर स्थित रेडक्रॉस सभाकक्ष में जिला स्तरीय पर्यवेक्षण समिति की बैठक लेकर अधिक से अधिक कृषकों को बीमा आवरण में शामिल करने के लिए निर्देशित किया, जिससे कि प्राकृतिक आपदाओं से फसल प्रभावित होने पर उन्हें क्षतिपूर्ति मिल सकें।

जिले में संचालित प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत खरीफ वर्ष 2024 मौसम के लिए जिले के लिए धान सिंचित, धान असिंचित, मक्का, सोयाबीन (ग्राम स्तर पर) फसलों को अधिसूचित फसलों में शामिल किया गया है। योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को पंजीयन कराना जरूरी है। इसके लिए अंतिम तिथि 31 जुलाई 2024 निर्धारित की गई है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत प्रतिकूल मौसम, सूखा, बाढ़, जलप्लावन, ओलावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से किसानों को होने वाली नुकसान से राहत दिलाई जाती है। योजना में ऋणी और अऋणी किसान जो भू-धारक व बटाईदार हो, शामिल हो सकते हैं।

छत्तीसगढ़ कांग्रेस में सर्जरी की कवायद : मोर्चा, संगठन और विभागों में होगा बड़ा बदलाव

रायपुर (आरएनएस)। 15 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद 2018 में छत्तीसगढ़ की सत्ता में आई कांग्रेस दिसंबर 2023 में सत्ता से बाहर हो गई। इसके ठीक 6 महीने बाद आए लोकसभा चुनाव के परिणामों में भी कांग्रेस को झटका लगा। पार्टी 2019 में जीती हुई 2 में से एक सीट इस चुनाव में हार गई। छत्तीसगढ़ की 11 में से कांग्रेस केवल 1 लोकसभा सीट ही जीत पाई। इन हारों के बीच पार्टी में अंतर्कलह बढ़ गया है। पार्टी के कई समर्पित नेता और कार्यकर्ताओं ने इस्तीफा दे दिया है। इससे पार्टी में फिर हताशा का माहौल है।

इस बीच इस साल के अंत में राज्य में पंचायत और नगरीय निकाय चुनाव होने हैं। कांग्रेस इन चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करके फिर कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ाना चाह रही है। पंचायत और नगनरीय निकाय चुनावों में प्रदर्शन बेहतर करने के लिए पार्टी सुधार की प्रक्रिया शुरू करने जा रही है। इसकी शुरुआत संगठन में बदलाव से करने की योजना है। पहले चरण में पार्टी के मोर्चा, संगठन और विभागों में बदलाव होगा।

पार्टी नेताओं के अनुसार सबसे पहले निष्क्रिय और केवल बड़े नेताओं के आशीर्वाद के दम पर कुर्सी पर बैठे नेताओं की छुट्टी की जाएगी। उनके स्थान पर परफार्मेंस के आधार पर नए चेहरों को जिम्मेदारी दिए जाने के संकेत हैं। नगरीय निकाय चुनाव से पहले प्रकोष्ठों और विभागों में नई नियुक्तियां करने पर जोर दिया गया है। इससे पहले संगठनात्मक आंदोलनों में भी परफार्मेंस का आकलन किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन में पांच राष्ट्रीय पुरस्कार

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ को दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन में उत्कृष्ट कार्यों के लिए पांच राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा जाएगा। भारत सरकार द्वारा राज्य शहरी विकास अभिकरण (सूडा) और प्रदेश के चार नगरीय निकायों बिलासपुर, रायगढ़, चांपा एवं भाटापारा का चयन प्रतिष्ठित 'स्पार्क-2023-24' पुरस्कारों के लिए किया गया है। राज्य में शहरी गरीब परिवारों को सशक्त बनाने और उनकी आजीविका के अवसरों को बढ़ाने में उत्कृष्ट कार्यों के लिए ये पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं। केन्द्रीय मंत्रालय द्वारा 18 जुलाई को नई दिल्ली के इंडिया हैबिटॉट सेंटर में आयोजित समारोह में सूडा और चारों नगरीय निकायों को पुरस्कृत किया जाएगा।

भारत के अगले विदेश सचिव के रूप में विक्रम मिस्री ने संभाला कार्यभार

नई दिल्ली (एजेंसी)। 1989 बैच के आईएफएस अधिकारी विक्रम मिस्री ने सोमवार को अगले विदेश सचिव के रूप में कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने विनय मोहन क्वात्रा की जगह ली है। विदेश मंत्रालय ने एक्स पर पोस्ट किया, टीम एमईए विदेश सचिव मिस्री का गर्मजोशी से स्वागत करता है और उनके सफल कार्यकाल की कामना करता है।

सरकार ने 28 जून को मिस्री की नियुक्ति की घोषणा की थी। क्वात्रा का सेवा विस्तार 12 मार्च को स्वीकृत हुआ था और 14 जुलाई को समाप्त हो गया। साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय में उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के रूप में मिस्री का कार्यकाल भी कम कर दिया गया।

मिस्री अपने पिछले कार्यभार में उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के रूप में कार्यरत थे। उन्हें तीन प्रधानमंत्रियों- इंद्र कुमार गुजराल, मनमोहन सिंह और नरेंद्र मोदी के निजी सचिव के रूप में सेवा करने का दुर्लभ गौरव प्राप्त है। एनएसए डिप्टी नियुक्त होने से पहले, मिस्री ने 2019 से 2021 तक चीन में भारत के राजदूत के रूप में कार्य किया। माना जाता है कि जून 2020 में गलवान घाटी में झड़प के बाद तनाव काफी बढ़ने के बाद भारत और चीन के बीच बातचीत में मिस्री ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

कोशिशें लाई रंग, छत्तीसगढ़ में मलेरिया के टूटे डंक

बस्तर में अब आधे ही रह गये मामले

राज्य में पॉजिविटी रेट 4.60 से घटकर अब 0.51 प्रतिशत

रायपुर (आरएनएस)। घने जंगलों और दुर्गम क्षेत्रों वाले बस्तर संभाग में मलेरिया जैसी बीमारियों की रोकथाम हमेशा से एक कड़ी चुनौती रही है, लेकिन इसके बावजूद हालात तेजी से बदले भी हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने बारिश के मौसम को देखते हुए राज्य के स्वास्थ्य विभाग को मलेरिया जैसी बीमारियों की रोकथाम के लिए सक्रिय कदम उठाने के निर्देश दिए हैं। इन निर्देशों से बस्तर सहित पूरे राज्य में मलेरिया के मामलों में उल्लेखनीय कमी आई है, जो एक बड़ी उपलब्धि है। इस बारिश के दौरान मलेरिया उन्मूलन की दिशा में प्रयासों को तेज करने के मुख्यमंत्री के निर्देश पर स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल बीजापुर जिले के दौरे पर हैं।

छत्तीसगढ़ के मलेरिया के कुल मामलों में से 61.99 फीसदी दंतेवाड़ा, बीजापुर, और नारायणपुर से आते हैं। इन जिलों में स्वास्थ्य विभाग की सक्रियता और मुख्यमंत्री के निर्देशन में किए गए कार्यों से मलेरिया के मामलों में काफी कमी आई है।

बस्तर संभाग में मलेरिया के मामलों में 50 फीसदी की कमी आई है। मलेरिया के वार्षिक परजीवी सूचकांक दर के अनुसार, 2018 में छत्तीसगढ़ में मलेरिया की दर 2.63 फीसदी थी जो 2023 में घटकर 0.99 फीसदी रह गई है। इसी तरह बस्तर में यह दर 16.49 फीसदी से घटकर 7.78 फीसदी रह गई है। मलेरिया उन्मूलन अभियान के तहत 2020 से 2023 के दौरान, पहले से नौंवे चरण तक मलेरिया धनात्मक दर 4.60 फीसदी से घटकर 0.51 फीसदी हो चुकी है।

मुख्यमंत्री की घोषणा पर अमल, 24 घंटे के अंदर मिली जशपुर अंचल को एंबुलेंस और शव वाहन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के घोषणा के अनुरूप स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में जशपुर जिले को दो बड़ी सुविधा मिली है। मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी कौशल्या साय ने आज सीएम कैंप बगिया में दो एंबुलेंस और एक शव वाहन को हरी झंडी दिखाकर जरूरतमंद मरीजों की सेवा के लिए रवाना किया। एंबुलेंस दुलदुला ब्लॉक के करडेगा और फरसाबहार ब्लाक के कोल्हेनझरिया में सेवा देगी। वहीं मुक्तांजली वाहन दुलदुला में सेवा प्रदान करने के लिए तैनात रहेगी।

एक दिन पहले ही रविवार को दुलदुला में आयोजित मतदाता अभिनंदन समारोह में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इसकी घोषणा की थी। घोषणा के 24 घंटे से भी कम समय में ही जिलेवासियों को एम्बुलेंस और शव वाहन की सुविधा मिली है। यह भी उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री साय की पहल से दिसंबर 2023 से अब तक जिले को 7 एंबुलेंस और 1 शव वाहन मिल चुके हैं।

समाज सेवी विजय गंगवाल BJS छत्तीसगढ़ राज्य के अध्यक्ष मनोनीत : विकास गोलछा महासचिव

रायपुर (विश्व परिवार)। वृंदावन ऑडिटोरियम में मुखरित मौन शीर्षक से एक सामाजिक उत्सव कार्यक्रम का सफल नियोजन BJS छत्तीसगढ़ द्वारा हुआ। इस अवसर BJS के वर्तमान व आगामी राष्ट्रीय अध्यक्षों का एक साथ प्रथम बार राज्य में आगमन हुआ। इस कार्यक्रम में 4 अलग-अलग सामाजिक विधाओं उद्बोधन, अभिनंदन, विवेचना व सम्प्रेषणा उद्बोधन का समायोजन किया गया।

सामाजिक उत्कर्ष का प्रगतिशील पथ एक सम्यक् दृष्टिकोण विषय पर राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र लुंकड़ जी एवं नवनियुक्त राष्ट्रीय अध्यक्ष नंदकिशोर साँखला जी का अत्यंत प्रेरक उद्बोधन रहा।

आज लगभग 250 जैन समाज के लोगो के बीच रायपुर के अग्रणी समाजसेवी श्री विजय गंगवाल का छत्तीसगढ राज्य के आगामी अध्यक्ष, श्री संजय सिंगी को आगामी नेशनल हेड EOC की तथा श्री मनोज लुंकड़ को आगामी नेशनल हेड कैरियर गाइडेंस की उदघोषणा श्री राजेंद्र लुंकड़ जी एवं नंदकिशोर साँखला जी द्वारा किया की गई।

अभिनंदन की इसी कड़ी में जैन गौरव अलंकरण से चुनिंदा 6 विभूतियों को उनके द्वारा किए जा रहे अतिविशिष्ट कार्यों हेतु सम्मानित किया गया। इस हेतु राज्य भर से 28 नामांकन BJS की विभिन्न शाखों के माध्यम से प्राप्त हुए थे।

विवेचना के अंतर्गत नवनियुक्त राज्य अध्यक्ष विजय गंगवाल के मनोगत को प्रश्नोत्तरी के माध्यम से सदन को अवगत कराया गया। सूत्रधार रहीं श्रीमती लहर लुंकड़।

सम्प्रेषणा के तहत BJS छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलो के कार्यकर्ताओं का सम्मान उनके किए गए उत्कृष्ट कार्यों के आधार पर किया गया।

भारतीय जैन संघटना, छत्तीसगढ़ आगामी राज्य महासचिव के लिए विजय गंगवाल ने CA विकास गोलछा का नाम की उदघोषणा की। विकास गोलछा वर्तमान में स्टेट एक्ज़ीक्यूटिव मेम्बर है और बिज़नेस डेवलपमेंट प्रोग्राम के चेयरपर्सन है।

5.36 करोड़ रुपए लागत के गोडाउन सह कार्यालय भवनों का लोकार्पण

अभिनंदन समारोह में शामिल हुए डिप्टी सीएम साव

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव गरियाबंद जिले के ग्राम कोपरा को नगर पंचायत का दर्जा मिलने के बाद संचालन समिति के गठन के मौके पर आयोजित अभिनंदन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने समारोह में जिले के 21 गांवों में पांच करोड़ 36 लाख रुपए की लागत से निर्मित 200 मीट्रिक टन गोडाउन-सह-कार्यालय भवनों का लोकार्पण किया। उन्होंने नवगठित कोपरा नगर पंचायत के विकास के लिए 50 लाख रुपए और राजिम नगर के विकास के लिए दो करोड़ रुपए देने की घोषणा की।

उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिन कोपरावासियों के लिए बहुत ही ऐतिहासिक और गौरवशाली है। मैं यहां के सभी नागरिकों को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में प्रदेश में सभी वर्गों के विकास के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मोदी की गारंटी के तहत जो वादे किए गए थे, उन वादों पर सरकार बनते ही अमल शुरू कर दिया गया है। इनका सीधा लाभ पात्र हितग्राहियों को मिल रहा है।

अरुण साव ने कहा कि कोपरा ग्राम पंचायत से नगर पंचायत बना है। इसके सुव्यवस्थित विकास के लिए किसी भी प्रकार की राशि की कमी नहीं आएगी। कोपरा को योजनाबद्ध तरीके से एक नया शहर बनाएंगे। इसके लिए हमें 50 वर्षों की कार्ययोजना बनाकर काम करने की आवश्यकता है। यहां सुव्यवस्थित सड़क, सीसी रोड, नाली, बिजली, पेयजल, चिकित्सालय, स्कूल सहित अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएंगी।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, मंगलवार 16 जुलाई 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

कर्नाटक विधान सभा मे भूपेश बघेल एवं प्रदीप जैन 'आदित्य' का अभिनन्दन

बेंगलुरु (विश्व परिवार)। कर्नाटक विधानसभा की कार्यवाही में आज छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' ने भाग लिया। इस अवसर पर विधानसभा के अध्यक्ष श्री यू टी खादर फरीद ने उद्घोषणा की कि आज की विधानसभा की कार्यवाही को देखने के लिए छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' में सदन पधारे हुए हैं। पूरे सदन द्वारा तालियों की गड़गड़ाहट के साथ दोनों नेताओं का अभिनंदन किया गया। उल्लेखनीय है कि दोनों नेता बंगलौर दौरे पर पहुंचे है। उन्होने कर्नाटक सरकार के प्रमुखों से चर्चा की।

खरीफ फसलों का बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 जुलाई

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना मौसम खरीफ वर्ष 2024 के क्रियान्वयन हेतु फसल बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2024 निर्धारित की गई हैं। योजना में धान सिंचित, धान असिंचित फसलों, उड़द, मूंग, मूंगफली, कोदो, कुटकी, मक्का, अरहर /तुअर, रागी एवं सोयाबीन को शामिल किया गया है। इस योजना से किसानों को प्रतिकूल मौसम सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से फसलों को होने वाले नुकसान की भरपाई में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना मौसम खरीफ वर्ष 2024 अंतर्गत जिले में अधिकाधिक कृषकों को बीमा आवरण में सम्मिलित करने हेतु फसल बीमा प्रचार-प्रसार हेतु जागरूकता अभियान शुरू किया गया है। कृषि विभाग ने किसानों से अनुरोध किया है कि अपना आधार कार्ड खरीफ वर्ष के लिए दिनांक 31 जुलाई 2024 से पूर्व बैंक में अपडेट करा लें। फसल बीमा पोर्टल पर बिना आधार प्रमाणिकरण के बीमा मान्य नहीं होगा।

कार्यशाला में विषय में शत्-प्रतिशत परिणाम प्राप्ति हेतु शिक्षकों की समस्याओं का किया जा रहा है समाधान

संस्कृत विषय की कार्यशाला हुई सम्पन्न

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। ज़िला कलेक्टर डॉ रवि मित्तल एवं ज़िला पंचायत के मुख्य कार्यपालिका अधिकारी अभिषेक कुमार के मार्गदर्शन में एवं जिला शिक्षा अधिकारी जशपुर प्रमोद कुमार भटनागर के निर्देशन में आयोजित उन्मुखीकरण कार्यशाला में संस्कृत विषय अध्यापन कराने वाले शिक्षकों का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती वंदना के साथ हुई संस्कृत विषय में अध्यापन के समय आने वाले कठिनाई की चर्चा करते हुए सभी बिन्दुओं को मास्टर ट्रेनर द्वारा प्रोजेक्टर के माध्यम से विषयवस्तु को विस्तृत रूप से समझाया गया शिक्षकों के लिए ब्रेन स्टॉर्मिंग गतिविधि से सभी शिक्षकों को शत् प्रतिशत परीक्षा परिणाम प्राप्त करने एवं शत् प्रतिशत अंक अर्जित कराने के लिए प्रोत्साहित किया गया। मास्टर ट्रेनर संजय दास के द्वारा नई शिक्षा नीति-2020 के प्रमुख बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। मास्टर ट्रेनर ज्योति श्रीवास्तव और विजय साहू के द्वारा बताया गया कि यूट्यूब का उपयोग करते हुए संस्कृत विषय का अभ्यास बच्चों को कराया जा सकता है। किस प्रकार अभिनय के द्वारा संस्कृत विषय को रोचक बनाया जा सकता है इस पर भी प्रस्तुति दी गई। पॉवर पॉइंट के माध्यम से व्याकरण को सरल विधि से पढ़ाने का तरीका भी बताया गया श्लोक को सरलतापूर्वक सस्वर वाचन करते हुए अर्थ को भी समझाया गया एवं श्लोकों में निहित व्याकरण के तत्वों का स्पष्टीकरण किया गया संस्कृत विषय में निबंध, गद्य, श्लोक, पत्र लेखन को सरलता से छात्रों को समझाने के तरीके एवं मनोरंजन के साथ उसे समझकर संस्कृत में ब्यक्त करने के तरीकों से बताया गया, साथ ही संस्कृत विषय से कैरियर बनाने के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा किया गया.। मास्टर ट्रेनर विजय साहू द्वारा बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्र पैटर्न एवं अंक विभाजन पर चर्चा करते हुए कम अधिगम वाले बच्चों को चिन्हांकित कर उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण के उपायों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। यशस्वी जशपुर के नोडल अधिकारी विनोद गुप्ता द्वारा शिक्षकों को कहा गया कि बच्चों में संस्कृत विषय के कौशल का विकास करें जिससे धारा प्रवाह संवाद संस्कृत में छात्र कर सके इसके साथ ही उन्होंने नवमीं और दसवीं में विषयवस्तु को अध्यापन के पूर्व 15 दिन तक कक्षा आठवीं के कठिन बिंदुओं को चिन्हांकन करके अतिरिक्त कक्षाएँ संचालित कर उनके समस्याओं को समाधान करने का प्रयास करेंगे। गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर सभी से कार्यशाला का फीडबैक भी प्रतिदिन लिया जा रहा है। उन्मुखीकरण कार्यशाला में यशस्वी जशपुर के संजीव शर्मा एवं अवनीश पांडेय उपस्थित रहे।

माँ कामाख्या धर्मादा ट्रस्ट के द्वारा सुंदरकांड का आयोजन

धमतरी (विश्व परिवार)। आज चि0 अत्रय के जन्मदिन के अवसर पर रुद्री रोड, दुलारी नगर धमतरी में सुंदरकांड का पाठ एवम हनुमान चालीसा और भजन किया गया। साथ में जिला अध्यक्ष श्रीमति कमलेश गुप्ता के तरफ से पांच वरिष्ठ सदस्यो को बरसात को देखते हुए छाता वितरण किया गया, हमारे ट्रस्ट के उद्देश्य के बारे में और आगामी कार्यक्रम गुरु पूर्णिमा जो मारुति मंगलम रायपुर में 21 जुलाई को होने जा रहा है उसके बारे में सबको बताया गया।

इस कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष श्रीमती कमलेश गुप्ता, श्रीमति बसंती शर्मा, श्रीमति सुनैना मिश्रा, श्रीमति सरोज तिवारी, अनिता पाण्डे, कौशल, वाचा, रेणुका केशरवानी, साधना गुप्ता, वृंदावन गुप्ता जी, विष्णु साहू सहित सभी सहयोगी भाई बहने उपस्थित रहे। खूब बधाई गाकर टॉफी और नृत्य के साथ यह उत्सव मनाया गया गुरुदेव श्री संकर्षण शरण जी महाराज ने सभी को इस पुनीत कार्य के लिए साधुवाद दिए।

ट्रेनों में स्वच्छता प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के लिए सभी पेंट्रीकार प्रबंधकों को कड़ी चेतावनी

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय रेलवे सभी ट्रेनों में स्वच्छता और परिचालन अनुशासन के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है 7 रायपुर रेल मंडल में इसी क्रम में यात्रियों को स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने मंडल से चलने /गुजरने वाली सभी एक्सप्रेस/ सुपरफास्ट ट्रेनों में बेहतर सफाई व्यवस्था बनाए रखने के प्रयास किए जा रहें है। इसी उद्देश्य से रायपुर स्टेशन में क्लीन ट्रेन स्टेशन एवं मंडल से चलने वाली सभी एक्सप्रेस ट्रेनों में ऑन बोर्डिंग हाउस किपिंग स्टाफ जैसी व्यवस्थाएं भी उपलब्ध कराई गई है। इसके अतिरिक्त लंबी दूरी की ट्रेनों में यात्रा के दौरान पेंट्रीकार से सृजित कूड़े के निस्तारण के लिए इसको एकत्र करने हेतु विभिन्न स्थानों पर गार्बेज कलेक्शन पॉइंट बनाया बनाए गए हैं ताकि न केवल रेल गाड़ियों एवं रेल परिसर में सफाई बनी रहे बल्कि रेल पटरियों के किनारे भी सफाई व्यवस्था बनी रहे और यात्रियों की यात्रा पर्यावरणीय रूप से एवं हाइजीन की दृष्टि से उत्कृष्ट रहे। विभिन्न स्टेशनों पर खाद्य स्टालों को भी स्वच्छता नियमों और प्रोटोकॉल का उल्लंघन करने के खिलाफ चेतावनी दी गई है और एक कड़ा संदेश दिया गया है कि उल्लंघन करने वालों से गंभीरता से निपटा जाएगा।

ट्रेनों व स्टेशनों में स्वच्छता मानकों का बेहतर अनुपालन सुनिश्चित करने नियमित रूप से अभियान भी चलाये जा रहे हैं। साथ ही सभी पेंट्रीकार एवं फूड स्टाल संचालकों को स्वच्छता मानकों का अनिवार्य रूप से पालन करने का सख्त निर्देश दिया गया है रेलवे यात्रियों से अपील करता है कि वे स्वच्छता सुनिश्चित करने की इस पहल का समर्थन करें और स्वच्छता मानदंडों और नियमों का उल्लंघन करने वाली ऐसी किसी भी घटना के मामले में रेल मदद के माध्यम से तुरंत अपनी शिकायत दर्ज कराएं।

निपनिया रेलवे समपार फाटक पर मरम्मत कार्य के लिये सड़क यातायात बंद रहेगा

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर रेल मंडल के निपनिया समपार फाटक क्रमांक 378 (किमी 749/14-16) में दिनांक 16.07.2024 जुलाई 2024 दिन मंगलवार सुबह 08:00 बजे से दिनांक 17.07.2024 बुधवार शाम 05:00 तक के लिए आवश्यक मरम्मत कार्य के कारण समपार फाटक से वाहनों का आवागमन बंद रहेगा। समपार फाटक की मरम्मत करना रेल यातायात व यात्रियों की संरक्षा की दृष्टि से अति आवश्यक हैं।

बारिश में कोई ना हो बेघर, विधायक यादव ने की चिंता, कलेक्टर को लिखा पत्र

भिलाई (विश्व परिवार)। भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव ने शहर के गरीब और असहायक लोगों की चिंता की। ऐसे लोग जिनका खुद का मकान नहीं है. अपने परिवार के साथ में बीएसपी के मकान में रह रहे है और अपना जीवन बसर कर रहे है. एसे लोगों की फिक्र करते हुए विधायक श्री यादव ने पहल की है और कलेक्टर को पत्र लिख कर साफ निर्देश दिए है की टाउनशिप क्षेत्र में बारिश के मौसम में बेदखली की कार्यवाही पर रोक लगाया जाए। विधायक ने अपने पत्र में लिखा है की श्रीमती मोहनी राव, पता-सेक्टर-6, भिलाई सहित अन्य लोगों ने जनदर्शन में बीएसपी प्रबंधन द्वारा बारिश के मौसम में बेदखली की कार्यवाही से अवगत कराते हुए रोक लगाने निवेदन किया गया है।

ज्ञात हो कि टाउनशिप क्षेत्र में विगत कई वर्षों से निवासरत है। जिन्हें बारिश के दौरान बिना व्यवस्थापन के खाली कराया जाना मानवीय दृष्टिकोण से उचित नहीं है। अतः शासन के आदेशानुसार बारिश में बेदखली की कार्यवाही पर रोक का पालन करते हुए एवं नियमानुसार प्रभावितों को पंजीकृत कर इन्हें शासन की योजना मोर मकान-मोर आस के तहआवास आवंटन का लाभ दिलाने आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करे।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर कालोनी,** रायपुर में निर्मित **एम.आई.जी.-01** योजना में से भवन/ **भूखण्ड क्र. एम.आई.जी.-01/166 श्री मनसाराम देवाजी मौंदेकर पिता श्री देवाजी मौंदेकर** को आबंटित/ नामांतरित किया गया है। मूल आबंटी/ नामांतरी द्वारा दिनांक **05.09.2002** को विक्रय विलेख निष्पादित करा लिया गया है।

मूल आबंटी / नामांतरी की मृत्यु दिनांक **04.04.2021** को हो जाने के कारण **श्री दीपक मौंदेकर पिता स्व. मनसाराम देवाजी मौंदेकर** द्वारा उक्त भवन/ भूखण्ड अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, वारिसों **(पार्वती मौंदेकर, देवेन्द्र मौंदेकर, लीना मौंदेकर, बीना मौंदेकर पिता/पति स्व. मनसाराम देवाजी मौंदेकर)** की सहमति पत्र, एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन/ भूखण्ड **श्री दीपक मौंदेकर पिता स्व. मनसाराम देवाजी मौंदेकर** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय/ वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के नामांतरण के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से **15 दिन** के अन्दर स्वतः उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेंगी, एवं भवन का नामांतरण आदेश जारी कर दिया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा दीनदयाल उपाध्याय नगर कालोनी, **डंगनिया,** रायपुर में निर्मित एल.आई.जी. योजना के अतंर्गत भवनों में से **भवन क्र.-एल.आई.जी-727,** सेक्टर-02 में **श्रीमती नेहा नमिता पति स्व. श्री नंदन कुमार** को भाड़ाक्रय आधार/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित/ नामांतरित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **21.03.2008** को सेलडीड निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक **09.01.2024** को नोटरी द्वारा निष्पादित विक्रय अनुबंध की छायाप्रति प्रस्तुत कर उक्त भवन **श्रीमती सुमन झा पति श्री अशोक कुमार झा** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के **विक्रय के संबंध में** किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के **15 दिन** के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जायेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा **शंकर नगर सरहद,** रायपुर में निर्मित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **एल.आई.जी. फ्लैट क्रमांक-156,** ब्लॉक-10, द्वितीय तल, **श्री राजेश गरेवाल पिता श्री एम.एल. गरेवाल** के नाम पर एकमुश्त आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा समस्त राशि जमा कर फ्लैट कि सेलडीड दिनांक **09.09.2010** को पंजीकृत करने उपरांत फ्लैट का आधिपत्य प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री राजेश गरेवाल पिता श्री एम.एल. गरेवाल,** निवासी- म.नं.-179, अविनाश कैपीटल होम्स-02, गली नं.-30, साईंस सेंटर के पास, अंबुजा मॉल के पीछे सड्डू, रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त फ्लैट को क्रेता **श्रीमती किरण देवी पति श्री प्रदिप कुमार शर्मा,** निवासी बथुआ बाजार, माधो मठ, गोपालगंज, बिहार को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र **(एन.ओ.सी.)** प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त फ्लैट के **विक्रय के संबंध में** किसी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के **15 दिवस** के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 251 दिनांक 12.07.2024
वार्ड का नाम- रविशंकर शुक्ल वार्ड
वार्ड क्र. 13 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **13** मांग **पंजी क्र. 1934 युआईडी 37793** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **दविन्दर सिंह भाटिया/ स्व. कल्याण सिंह भाटिया** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सरवन सिंह/ चरण सिंह** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **11-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 253 दिनांक 15.07.2024
वार्ड का नाम- जवाहर लाल नेहरू वार्ड
वार्ड क्र. 36 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **36** मांग **पंजी क्र. 410 युआईडी 29858** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **पुनीतराम साहू/ बुधराम साहू** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **भानुप्रताप साहू/ दौलत राम साहू** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **14-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 252 दिनांक 15.07.2024
वार्ड का नाम- रविशंकर शुक्ल वार्ड
वार्ड क्र. 13 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 13 मांग **पंजी क्र. 1936 युआईडी 37807** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **मेसर्स प्रगति पाइप इंडस्ट्रीज प्रा.लि./ मीना झुनझुनवाला/ प्रकाश चन्द्र झुनझुनवाला** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **शैलेन्द्र लाठ (एच.यू.एफ.) कर्ता- शैलेन्द्र लाठ/ सुशील कुमार लाठ** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **14-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12963/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 15-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12963
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **17** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108A0799A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MS USD DEVELOPERS ADITYA AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DINESH KUMAR AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BABITA KUMHAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANTRAM KUMHAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12964/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 15-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12964
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **17** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR109C00048** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RANJANA BORKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PRAKASH BORKAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MADHURI CHOPKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NARENDRA CHOPKAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12883/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 15-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12883
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **17** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107B00067** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **R. RAVINDRA KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE R. ANANT RAO** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DEEPTI CHIMANKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SUNIL CHIMANKAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./13009/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 15-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13009
वार्ड का नाम- 5 - बंजारी माता मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **5** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105F00058** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **URMILA DHAUDIA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **FAKIRCHAND URE FAKIR CHARAN DHAUDIA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **UTTAM MANDAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O RAVI MANDAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./13003/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 15-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13003
वार्ड का नाम- 27 - इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220F00263** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MRS. ROM PATI GOPAL DAS MRS. KAJAL W/O SHYAM LAL MAKHIJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MRS. ROM PATI GOPAL DAS MRS. KAJAL W/O SHYAM LAL MAKHIJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती वन्दना चौथवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति- श्री अनिल कुमार चौथवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./12952/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 15-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12952
वार्ड का नाम- 27 - इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220C00174** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **HARI KUWAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VISHRAM BHAI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री लक्ष्य चावड़ा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- श्री नीरज चावड़ा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./12713/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 14-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12713
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **50** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445Q00272** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JITENDRA BADWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **J.R. BADWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. ANISHA BADWANI ARORA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SHRI KABIR ARORA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-10
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 248 दिनांक 12.07.2024
वार्ड का नाम- छत्रपति शिवाजी वार्ड
वार्ड क्र. 15 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **15** मांग **पंजी क्र. 359 युआईडी 19090** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **संतोष गायकवाड़/ विसौहा** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **राज कुमार गायकवाड़/ संतोष** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **11-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 249 दिनांक 12.07.2024
वार्ड का नाम- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड
वार्ड क्र. 12 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **12** मांग **पंजी क्र. 377 युआईडी 16304** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **फूलबाई/ सोनू जायसवाल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **राजेश्वरी साहू/ रूपसिंग साहू** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **11-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 250 दिनांक 12.07.2024
वार्ड का नाम- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड
वार्ड क्र. 12 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **12** मांग **पंजी क्र. 377 युआईडी 16304** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **फूलबाई/ सोनू जायसवाल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **अमरनाथ निषाद/ मतवारी निषाद** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **11-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर मंगलवार 16 जुलाई 2024

आंगनबाड़ी के बच्चों के साथ कलेक्टर ने किया पौधारोपण

हम सभी लोगों को अपने आसपास के क्षेत्रों में अपने अनुकूल स्थलों का चयन कर स्वप्रेरणा से पेड़ लगाने चाहिए

सूरजपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर रोहित व्यास के द्वारा जिला मुख्यालय सूरजपुर के पंच मंदिर वार्ड के आंगनबाड़ी केन्द्र में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में 'एक वृक्ष मां के नाम' अभियान के तहत् पौधा रोपित किया गया। महिला एवं बाल विकास विभाग के ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में जल संरक्षण एवं महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से जल शक्ति अभियान के 'नारी शक्ति से जल शक्ति' थीम के साथ तथा 'एक वृक्ष मां के नाम' अभियान अंतर्गत पौधों का रोपण किया गया। गौरतलब है कि जल शक्ति अभियान: कैच द रेन-2024 '' नारी शक्ति से जल शक्ति'' थीम के साथ लागू किया गया है। जिसका उद्देश्य जल संरक्षण में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को बढ़ाना है। जिसमें जल के सभी स्त्रोतों का संरक्षण, वर्षा जल के संचयन की दिशा में विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम के इस अवसर पर कलेक्टर रोहित व्यास ने सर्वप्रथम आंगनबाड़ी के बच्चों के साथ मिलकर आंगनबाड़ी परिसर में पौधारोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी लोगों को अपने आसपास के क्षेत्रों में अपने अनुकूल स्थलों का चयन कर स्वप्रेरणा से पेड़ लगाने चाहिए। ताकि अपने द्वारा लगाए पेड़ का देखभाल अच्छे से किया जा सके । उन्होंने कहा कि इसकी देखभाल अपनी मां की तरह करना चाहिए। कलेक्टर व्यास ने कहा कि आंगनबाड़ी में लगाए गए इन पेड़ों का नाम आंगनबाड़ी के बच्चों के नाम पर किया जाना चाहिए एवं इसके देखभाल के लिए उस बच्चे और उसके माता-पिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने जलशक्ति अभियान के बारे में बताते हुए कहा कि आज बोर के अंधाधुध उपयोग से भूजल स्तर घटता जा रहा है परंतु भूजल के पुनर्भरण का कार्य उस गति से नहीं चल रहा है। उन्होंने कहा कि आज देश के कई ऐसे महानगर हैं जहां भूजल स्तर खत्म हो गया है और वहां जल की समस्या विकराल हो गई है। अपने राज्य को ऐसे विकट परिस्थिति से बचाने के लिए उन्होंने सभी लोगों से अपने घरों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग लगाने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि लोग इस बात का ध्यान रखें कि आज सभी जगह कांक्रीट रोड, सड़कें और पक्के मकान बनने से वर्षाजल के भूमि में जाने के लिए स्थान नहीं मिल पा रहा है और वर्षा जल का या तो वाष्पीकरण हो जा रहा है या वह बह जा रहा है। इसलिए भूजल बढ़ाने का एकमात्र उपाय रेन वाटर हार्वेस्टिंग है। उन्होंने इसके लिए आग्रह किया है कि जिले के सभी पक्के घरों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग के लिए जिले के जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी कार्य करें। साथ ही उन्होंने जिले के अधिकारियों को निर्देशित भी किया है कि सभी शासकीय भवनों में शतप्रतिशत रूप में रेनवाटर हार्वेस्टिंग को स्थापित किया जाए।

संक्षिप्त समाचार

मजदूरों से भरा वाहन पलटा : 25 घायल

जांजगीर-चांपा(विश्व परिवार)। जिले के चारपारा से ठडगा बहरा गांव के बीच मजदूरों को लेकर जा रहा वाहन पलट गया। हादसे में 25 मजदूर घायल हुए हैं। जिसमें 4 की हालत गंभीर होने पर बिलासपुर सिम्स अस्पताल रेफर किया गया है। अन्य घायलों को इलाज के बाद छुट्टी दी गई है। घटना बलौदा थाना क्षेत्र की है। जानकारी के अनुसार छोटा हाथी वाहन में 30 से 35 लोग सवार थे। जिनमें पुरुष,महिला, युवक, युवतियां शामिल हैं। सभी भारत माला प्रोजेक्ट सड़क निर्माण में मजदूरी का काम करने जा रहे थे। इस बीच तेज रफ्तार में होने की वजह से वाहन ने नियंत्रण खो दिया। सड़क किनारे डिवाइडर से टकराने के बाद वाहन सड़क में पलट गया। हादसे के बाद ग्रामीणों की मदद से सीएचसी अस्पताल लाया गया। हादसे में 25 लोग घायल हुए। जिसमें 4 को बिलासपुर रेफर किया गया। घायलों का नाम रिया (20) ,राधिका (22), सावित्री (45) और संतोषी (60) है। बाकी घायलों को जिला अस्पताल जांजगीर और बीडीएम अस्पताल चांपा भर्ती कराया गया। सभी का प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दी गई।

एक्सीलेंस अवार्ड से नवाजे गये डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन लायन डा. नागेंद्र नारायण शर्मा

कोरबा(विश्व परिवार)। विश्व की अग्रणी समाजसेवी संस्था इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ लायंस क्लब्स के डिस्ट्रिक्ट 3233 सी के सत्र 2023-24 के डिस्ट्रिक्ट एवं मल्टीपल अवार्ड कार्यक्रम का आयोजन बिलासपुर में किया गया। जिसमे डिस्ट्रिक्ट 3233 सी के वर्ष 2023-24 के डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन लायन डॉ.नागेन्द्र नारायण शर्मा को एक्सीलेंस अवार्ड से 2023-24 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन शैलेश अग्रवाल एवं डिस्ट्रिक्ट सेक्रेटरी लायन आशीष अग्रवाल ने उनके उल्लेखनीय सेवा कार्यों के लिये मोमेंटो एवं सर्टिफिक्रेट प्रदान कर सम्मानित किया। साथ ही उनके होमक्लब लायंस क्लब कोरबा एवरेस्ट को सत्र 2023-24 में डायबिटीज के अंतर्गत उत्कृष्ट सेवा कार्यों हेतु डिस्ट्रिक्ट 3233 सी की डायबिटीज की माइक्रो चेयरपर्सन लायन रंजना महावर ने सर्वश्रेष्ठ क्लब अवार्ड से सम्मानित किया। एवं क्लब अध्यक्ष, रीजन जीएलटी कोऑर्डिनेटर लायन शिव जायसवाल को एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया। साथ ही डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन शैलेश अग्रवाल ने लायंस क्लब इंटरनेशनल के 2023-24 के मिशन को पूरा करने में विशेष योगदान दिये जाने के लिये लायन डॉ.नागेन्द्र नारायण शर्मा को डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स ऑफ सर्टिफिक्रेशन एप्रीसिएशन अवार्ड से भी सम्मानित कीया। उपरोक्त सभी अवार्ड डिस्ट्रिक्ट 3233 सी के सेक्रेटरी लायन आशीष अग्रवाल ने अपने बिलासपुर स्थित कार्यालय में डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन, लायंस क्लब कोरबा एवरेस्ट के सचिव लायन डॉ.नागेन्द्र नारायण शर्मा को ससम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर डिस्ट्रिक्ट 3233 सी के 2023-24 के डिस्ट्रिक्ट सेक्रेटरी लायन आशीष अग्रवाल, डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन, लायंस क्लब कोरबा एवरेस्ट के सचिव लायन डॉ.नागेंद्र नारायण शर्मा, कार्यकारिणी सदस्य लायन अश्विनी बुनकर एवं लायन देवबली कुंभकार विशेष रूप से उपस्थित रहे।

संस्कार स्कूल के स्टूडेंट्स ने कहा- नो प्लास्टिक

रायगढ़(विश्व परिवार)। शहर की प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्था संस्कार पब्लिक स्कूल के बच्चों ने पालीथिन से पर्यावरण पर पडने वाले दुष्प्रभावों पर गंभीर चिंता जताते हुए शहरवासियों को भी आगाह किया और प्लास्टिक का उपयोग बंद करने की अपील की। स्कूल के बच्चों ने पेपर से एक से बढकर एक सुंदर-सुंदर बैग्स बनाए। बच्चों ने स्कूल व शहर के बाजार में पहुंचकर अपने हाथों से बनाए बैग्स भी सब्जी विक्रेताओं व ठेले-गुमटियों में वितरित किए। नन्हे-मुन्ने बच्चों की इस मार्मिक अपील का शहरवासियों में अच्छा प्रतिसाद देखने को मिला। सभी ने स्कूल व बच्चों की इस पहल को अनुकरणीय बताते हुए पालीथिन का उपयोग नहीं करने की बात भी कही। संस्कार स्कूल के मार्गदर्शक रामचंद्र शर्मा ने बताया कि हमारी संस्था शैक्षणिक, सांस्कृतिक व खेलकूद गतिविधियों के साथ सामाजिक सरोकार के तहत विभिन्न कार्य करती है। इससे एक ओर बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है, तो दूसरी ओर बच्चों में एक अच्छे नागरिक के गुण भी बचपन से पनपते हैं। इसी कड़ी में स्कूल में पेपर-डे एक्टिविटी कराई गई। इसमें बच्चों ने पेपर से सुंदर-सुंदर बैग बनाए। इसके माध्यम से बच्चों के अंदर छुपी हुई प्रतिभा सामने आई। इस एक्टिविटी के माध्यम से हम बच्चों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने में भी कामयाब हुई। बच्चों ने जाना कि कैसे पालीथिन के उपयोग से पर्यावरण को नुकसान हो रहा है और इससे बचने के लिए हम क्या कर सकते हैं? बच्चों ने पेपर से न केवल बैग्स बनाए, बल्कि वे इसे बाजार में पहुंचकर सब्जी बिक्रेताओं व अन्य छोटे-छोटे व्यवसाय करेन वालों को वितरित किए।

संवेदनशील पुलिसिंग:पुलिस के जवान ने पेश की मानवता की मिसाल

दर्द से तड़प रही गर्भवती महिला को 3 कि.मी. कांवर में उठाकर पहुंचाया अस्पताल

रायगढ़(विश्व परिवार)। पुलिस लोगों की मदद के लिए हमेशा आगे रहती है। थाना कापू क्षेत्र अंतर्गत पहाड़ जंगल के बीच ग्राम पारेमेर घुटरूपारा बसा है जहां बरसात के दिनों में गांव के एक ओर चार पहिया वाहन का पहुंचना मुश्किल है। ऐसे में घुटरूपारा में एक गर्भवती महिला का दर्द उठना परिवार के लिए मुसीबत बन गया। परिवार ने गर्भवती सुष्मिता 28 साल को अस्पताल तक पहुंचाने डायल 112 को मदद के लिए काल किया गया। मेडिकल इमरजेंसी का कॉल थाना कापू राईनो को प्राप्त हुआ। कालर ने महिला को प्रसव पीड़ा होने की जानकारी दी। डायल 112 ड्यूटी में तैनात आरक्षक विपिन किशोर खलखो और ईआरवी वाहन चालक छोटू दास तुरंत रवाना हुए। गर्भवती महिला का घर नाला, पहाड़ी के उस पार स्थित होने और वाहन आवागमन के लिए रास्ता नहीं होने से आरक्षक प्रबल किशोर और वाहन चालक छोटू दास पैदल ही महिला के घर पहुंचे। गर्भवती महिला की स्थिति को देखकर बिना देरी किये आरक्षक प्रबल किशोर ने कावड़ से प्रसव पीड़ित महिला को वाहन तक ले जाने घरवालों को राजी किया और स्वयं एक युवक के साथ कांवर में महिला को उठाकर डायल 112 वाहन की ओर चल पड़ा। गर्भवती महिला को कांवर में लेकर जवान करीब 03 कि.मी.पहाड़ी नाला को पार कर डायल 112 के वाहन तक पहुंचा और वाहन में बिठाकर अस्पताल ले जा रहा था। रास्ते में गर्भवती को अत्यधिक पीडा होने से जवान ने सूझबूझ का परिचय देते हुए वाहन पेड की आड में खडा कराया, जहां मितानिन और महिला के परिजन ने बपर्दा गर्भवती महिला का सुरक्षित प्रसव कराया गया। जिसे डायल 112 वाहन से तत्काल नजदीकी शासकीय अस्पताल जमरगा में दाखिल किया गया जहां जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ हैं । स्थानीय लोगों ने ऐसी स्थिति में डायल 112 के त्वरित प्रतिक्रिया और सहायता के लिए पुलिस की सराहना की है।

राहुल अपने लिए पत्नी तो खोज नहीं पा रहे, देश की दशा और दिशा पर करते है बात-बृजमोहन

बिलासपुर(विश्व परिवार)। सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि इतनी पुरानी पार्टी देश के संसद में सनातनियों का विरोध कर रही है। राहुल गांधी अपने लिए पत्नी तो ढूंढ नही पा रहे हैं, देश की दशा और दिशा की बात करते हैं। मंत्री बनाने का विशेषाधिकार प्रधानमंत्री का है। मैं दिल्ली जाकर छत्तीसगढ़ में रहूंगा। साय सरकार कम समय में मोदी की गारंटी पूरी की है। कांग्रेस कानून व्यवस्था की बात कर रही जबकि पहले की अपेक्षा अपराध में कमी आई है । कांग्रेस को अपना शासन याद करना चाहिए । सांसद अग्रवाल कोनी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर के नए छात्रावास के उदघाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने पत्रकारों से चर्चा करते हुते कहा कि देश की संसद में कांग्रेस हिन्दू विरोधी बात करती है। मुट्ठीभर लोगो के लिए बहुसंख्यकों के खिलाफकांग्रेस खड़ी है। सनातन एक जीवनशैली है। देश में जो सनातन विरोधी बात करेगा उसके लिए कोई जगह नहीं है। भारत में अगर सनातन का विरोध होगा तो इसका जवाब मिलेगा। सरस्वस्ती शिशु मंदिर संस्कार की शिक्षा देता है आज इसकी बदौलत यहां से पढ़कर निकले छात्र हिंदू विरोधियों को जवाब दे रहे हैं। बृजमोहन अग्रवाल ने सरस्वस्ती शिशु मंदिर द्वारा कालेज की शुरुआत करने पर बधाई दी और उम्मीद जताई कि ये कालेज आने वाले समय में बड़ा रूप लेगा। विधायक अमर अग्रवाल ने कहा कि लंबे समय से कोनी में शिक्षा के माध्यम से विद्या भारती अपना काम कर रही है। धीरे धीरे ये विकसित हो रहा है विद्याभारती की मेहनत दिख रही है।

कलेक्टर अजीत वसंत ने बताया शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विकास को अपनी प्राथमिकता

कोरबा(विश्व परिवार)। जनता और शासन के बीच सामंजस्य बनाकर जिले के शहरी और ग्रामीण अंचलों का विकास करना ये पहली प्राथमिकता रहती है। हमने अपने कार्यों में आम लोगों को शासन की योजनाओं का लाभ मिले इसे प्राथमिकता से शामिल किया है। जनता और शासन के बीच आपसी संवाद बना रहे दूरियां न रहे ये हमारी कार्यशैली का उद्देश्य है। कोरबा शहर का औद्योगिक विकास करना उसे मॉडल रूप देना हमारे प्रमुख कार्यों में शामिल है। उक्त बातें कलेक्टर अजीत वसंत ने शनिवार को प्रेस से मिलिए कार्यक्रम में पत्रकारों से चर्चा के मध्य कही। उन्होंने कहा कि शहर के समुचित विकास और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को विकास की धारा से जोड़ा जाए प्रशासन इस दिशा में कार्य कर रहा है। कोरबा जिला प्रदेश के अन्य जिलों से अलग है, यहां औद्योगिक विकास पहले हुआ और आबादी बाद में बसी। खदानों के पास आबादी, संयंत्रों के पास आबादी का बसना यह उन्होंने यहा देखा है। कोरबा शहर को एक मॉडल रूप देना और अधोसंरक्षना का कार्य करना इस दिशा पर योजना बनाई जा रही है। शहर के साथ-साथ उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को भी मुख्य रूप से अधोसंरचना विकास में शामिल किया जाएगा। अभी तक उन्होंने जिले के विकास को लेकर भ्रमण किया है और यह महसूस किया है कि बहुत से काम होना अभी बाकी है और उस पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाना है। एसईसीएल की खदानों का विस्तार और भूविस्थापितों की समस्या उनके चुनौती है और वह एसईसीएल और प्रशासन के बीच लगातार इस दिशा पर कार्य कर रहे हैं।

कलेक्टर अजीत वसंत गांव की गलियों से लेकर शहर की सड़कों तक विस्तार से अपनी प्राथमिकताओं पर बोल गए

कोरबा(विश्व परिवार)। जनता और शासन के बीच सामंजस्य बनाकर जिले के शहरी और ग्रामीण अंचलों का विकास करना ये पहली प्राथमिकता रहती है। हमने अपने कार्यों में आम लोगों को शासन की योजनाओं का लाभ मिले इसे प्राथमिकता से शामिल किया है। जनता और शासन के बीच आपसी संवाद बना रहे दूरियां न रहे ये हमारी कार्यशैली का उद्देश्य है। कोरबा शहर का औद्योगिक विकास करना उसे मॉडल रूप देना हमारे प्रमुख कार्यों में शामिल है। उक्त बातें कलेक्टर अजीत वसंत ने शनिवार को प्रेस क्लब तिलक भवन में प्रेस से मिलिए कार्यक्रम में पत्रकारों से चर्चा के मध्य कही। उन्होंने कहा कि शहर के समुचित विकास और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को विकास की धारा से जोड़ा जाए प्रशासन इस दिशा में कार्य कर रहा है। कोरबा जिला प्रदेश के अन्य जिलों से अलग है, यहां औद्योगिक विकास पहले हुआ और आबादी बाद में बसी। खदानों के पास आबादी, संयंत्रों के पास आबादी का बसना यह उन्होंने यहा देखा है। कोरबा शहर को एक मॉडल रूप देना और अधोसंरक्षना का कार्य करना इस दिशा पर योजना बनाई जा रही है। शहर के साथ-साथ उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को भी मुख्य रूप से अधोसंरचना विकास में शामिल किया जाएगा। अभी तक उन्होंने जिले के विकास को लेकर भ्रमण किया है और यह महसूस किया है कि बहुत से काम होना अभी बाकी है और उस पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाना है। एसईसीएल की खदानों का विस्तार और भूविस्थापितों की समस्या उनके चुनौती है और वह एसईसीएल और प्रशासन के बीच लगातार इस दिशा पर कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में पत्रकारों द्वारा शहर की समस्याओं से संबंधित पूछे गए प्रश्नों का भी कलेक्टर अजीत वसंत ने सकारात्मक जवाब दिया। उन्होंने शहर की यातायात समस्या अंडर ब्रिज और बायपास सड़क के लिए योजनाबद्ध तरीके से किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि पायलट प्रोजेक्ट के तहत पोड़ी उपरोड़ा ब्लॉक से प्राईमरी व मीडिल स्कूल के बच्चों को नाश्ता देने की योजना शुरू की गई है।

डुमरडीह में खटाल की आड़ लेकर वन भूमि में किया जा रहा बेजा कब्जा, विभाग बना मूक दर्शक

कोरबा(विश्व परिवार)। वन मंडल कार्यालय कोरबा से चंद कदम दूर कोरबा कोरकोमा मार्ग पर डुमरडीह गांव में भैंस खटाल की आड़ में करीब 5 एकड़ वन भूमि पर बेजा कब्जा किया जा रहा है। वन विभाग मुक दर्शक बनकर बेजा कब्जा होने दे रहा है। वन मंडल कोरबा में वर्षों से जंगल राज कायम है। इसी का नतीजा है कि पूरे वन मंडल क्षेत्र में बड़े पैमाने पर वन भूमि में बेजा कब्जा कर लिया गया है। विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों की मिलीभगत और अनदेखी के कारण कोरबा शहरी क्षेत्र में ही बड़े पैमाने पर वन विभाग की जमीनों पर लोगों ने अतिक्रमण कर रखा है। अतिक्रमण का यह सिलसिला निर्वाध गति से जारी है। ताजा मामला कोरबा शहर के सरहदी गांव डुमरडीह का है। डुमरडीह में एक परिवार में वन भूमि पर न केवल अपना घर बना रखा है बल्कि मवेशियों का कोठा भी बना रखा है। इसके अलावे अपने घर के आसपास वन भूमि में लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में जगह-जगह मवेशियों को बढ़ने के लिए खूंटा गाड़ रखा है। मवेशियों को पूरे क्षेत्र में फैलाकर बांधकर रखा जाता है। ग्रामीणों के अनुसार यह भेजा कब्ज की प्रारंभिक प्रक्रिया है। बाद में इस पूरे क्षेत्र पर कब्जा कर लिया जाएगा और कटीले तारों की फेंसिंग लगा ली जाएगी अथवा पक्का बाउंड्री वाल बना लिया जाएगा। खटाल की आड़ में क्रमश: किया जा रहा है। यह बेजा कब्जा कोरबा से कोरकोमा जाते वक्त मुख्य मार्ग से ही बाय दिशा में साफदिखाई पड़ता है।

वृद्ध पिता की हत्या करने वाला कलयुगी पुत्र गिरफ्तार

जशपुर(विश्व परिवार)। जशपुर के बगीचा थाना के अंतर्गत रहने वाला नशोड़ी पुत्र ने नशे में अपनी ही वृद्ध पिता की हत्या कर दी। पुलिस ने मामले में आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार आरोपी संजय नागवंशी 39 वर्ष निवासी कुरोंग थाना बगीचा ने पिता ठाकुर राम उम्र 70 वर्ष को फावड़ा मार कर हत्या कर दिया। पुलिस ने मामले में आरोपी को पकड़कर पूछताछ की तो आरोपी ने बताया कि वह सुबह से ही शराब के नशे में था, उसके पिता द्वारा खेत में हल चलाने को कहने पर आरोपी संजय ने हल चलाने से मना कर दिया। इसी बता को लेकर पिता-पुत्र में विवाद शुरू हो गया, जिससे क्षुब्ध होकर नशेड़ी पुत्र ने पास में ही रखे फावड़ा उठाकर अपने पिता पर ताबड़तोड़ वार करना शुरू कर दिया। कान-नाक, चेहरे पर चोट के निशान पाए गए। आरोपी के कब्जे से घटना में प्रयुक्त फावड़ा को पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया है। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर मंगलवार 16 जुलाई 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

आतंकवाद को निर्णायक रूप से परास्त किया जाए

देश की अपेक्षा यह है कि आतंकवाद को निर्णायक रूप से परास्त किया जाए। ऐसा नहीं हो पा रहा है, तो सरकार और सुरक्षा तंत्र को अपनी अब तक की रणनीति पर सिरे से पुनर्विचार करना चाहिए। छह जुलाई को जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में आतंकवादियों के हमले में सेना को दो जवान मारे गए। उसके बाद जवाबी कार्रवाई में सेना ने छह दहशतगर्दों को ढेर कर दिया। मगर सिर्फ दो दिन बाद- आठ जुलाई की रात कठुआ में सेना के कारवां पर आतंकवादियों ने और भी ज्यादा घातक हमला किया। इसमें पांच सैनिकों की जान गई। बीते एक महीने में आतंकवादी गतिविधियों से संबंधित अनेक घटनाएं हुई हैं। यह याद करना उचित होगा कि पिछले नौ जून को जिस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने तीसरे कार्यकाल के लिए शपथ ग्रहण कर रहे थे, ठीक उसी समय जम्मू-कश्मीर में एक आतंकवादी हमला हुआ था। उसके बाद से ऐसी घटनाओं का एक सिलसिला बना हुआ है। यह इस बात का साफ संकेत है कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का एक नया दौर आया हुआ है। इससे कई गंभीर प्रश्न खड़े होते हैं। क्या राज्य प्रशासन एवं वहां के सुरक्षा तंत्र को इस बात का कोई सुराग नहीं था कि खास कर जम्मू इलाका आतंकवाद का नया अड्डा बन रहा है? आतंकवादियों के पास से जिस तरह के आधुनिक हथियार बरामद हुए हैं, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्हें सीमा पार से मदद मिल रही होगी। तो फिर सवाल यह उठता है कि सीमा पर चौकसी एवं घुसपैठ रोकने के उपायों का क्या हुआ? केंद्र सरकार को यह अवश्य समझना चाहिए कि ऐसी घटनाओं के लगातार होने से देशवासियों के मनोबल पर चोट लगती है। अब सोच का यह कवच भी नहीं है कि अनुच्छेद 370 के कारण आतंकवाद रोकने में कामयाबी नहीं मिल रही है। ऐसी दलीलें ज्यादा काम की नहीं हैं कि जितने सुरक्षा कर्मी मारे गए हैं, उनसे ज्यादा आतंकवादियों को ढेर किया गया है। देश की अपेक्षा यह है कि आतंकवाद को निर्णायक रूप से परास्त किया जाए। ऐसा नहीं हो पा रहा है, तो सरकार और सुरक्षा तंत्र को अपनी अब तक की रणनीति पर सिरे से पुनर्विचार करना चाहिए। जम्मू-कश्मीर के लोगों का दिल जीतना और सीमा पार के दखल को नियंत्रित करना दो ऐसी चुनौतियां हैं, जिनका मुकाबला किए बगैर संभवतः समस्या काबू में नहीं आएगी।

इंटरनेट का सुरक्षित उपयोग महत्त्वपूर्ण....

वरिंदर भाटिया

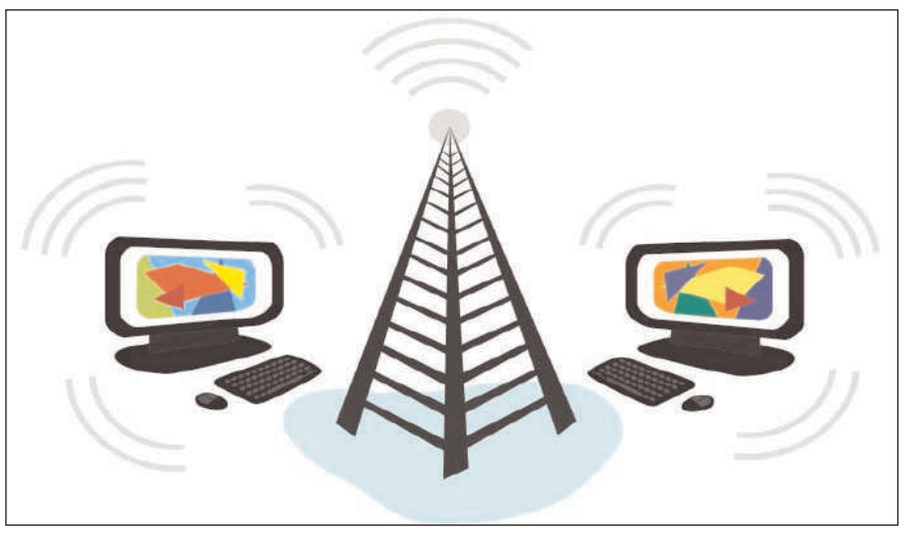

यह इस समय साइबर दुनिया में चर्चा का विषय है। इंटरनेट का 96 फीसदी हिस्सा डीप वेब और डार्क वेब के अंदर आता है। हम इंटरनेट कंटेंट के केवल चार फीसदी हिस्से का इस्तेमाल करते हैं, जिसे सरफेस वेब कहा जाता है। डार्क वेब इंटरनेट का ऐसा एक हिस्सा है जिसे सर्च इंजन द्वारा इंडेक्स नहीं किया जाता है। डार्क वेब को आम तौर पर गैरकानूनी और आपराधिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। लंदन में किंग्स कॉलेज के शोधकर्ता डैनियल मूर और थॉमस रिड ने 2015 में 5 सप्ताह तक 2723 लाइव डार्क वेब साइट्स की सामग्री को नजर रखी और पाया कि 57 प्रतिशत में अवैध सामग्री मौजूद थी। डीप वेब पर मौजूद कंटेंट को एक्सेस करने के लिए पासवर्ड की जरूरत होती है जिसमें ई-मेल, नेट बैंकिंग आते हैं। डार्क वेब को खोलने के लिए टॉर ब्राउजर का इस्तेमाल किया जाता है। यहां ड्रग्स, हथियार, पासवर्ड, चाइल्ड पॉर्न जैसी बैन चीजें उपलब्ध रहती हैं। डार्क वेब ओनियन राउटिंग टेक्नोलॉजी पर काम करता है। यह यूजर्स को ट्रैकिंग और सर्विलांस से बचाता है और उनकी गोपनीयता बरकरार रखने के लिए सैकड़ों जगह रूट और री-रूट करता है। आसान शब्दों में समझें तो वो शख्स कुछ भी करे, उसे पकडऩा नामुमकिन हो जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि डार्क वेब ढेर सारी आईपी एड्रेस से कनेक्ट और डिस्कनेक्ट होता है, जिससे इसको ट्रैक कर पाना असंभव हो जाता है। यहां यूजर की इन्फॉर्मेशन इंक्रिप्टेड होती है, जिसे डिकोड करना नाममुकिन है। डार्क वेब पर डील करने के लिए वर्चुअल करेंसी जैसे बिटकॉइन का इस्तेमाल किया जाता है। ऐसा इसलिए होता है, ताकि ट्रांजैक्शन को ट्रेस न किया जा सके। कहते हैं कि डार्क वेब पर हत्या की सुपारी देने से लेकर हथियारों की तस्करी तक कई अवैध काम होते हैं। डार्क वेब पर यूजर्स से उनकी पर्सनल डिटेल लीक करने की धमकी देकर उनसे मोटे पैसे वसूले जाते हैं। डार्क वेब पर ढेर सारे ऐसे भी स्कैमर्स होते हैं, जो बेहद सस्ते में वो चीजें भी बेचते हैं जो बैन हैं। बहुत से लोग वहां सस्ते फोन खरीदने के चक्कर में लाखों रुपए गंवा देते हैं। सरे विश्वविद्यालय में डा. माइकल मैकगायर्स द्वारा किए गए एक अध्ययन 'इनटू द वेब ऑफ प्रॉफिट' से पता चलता है कि हालात बदतर हो गए हैं। 2016 से 2019 तक डार्क वेब लिस्टिंग की संख्या जो किसी उद्यम को नुकसान पहुंचा सकती है, 20 प्रतिशत तक बढ़ गई है? सभी लिस्टिंग (ड्रग्स बेचने वालों को छोडक़र) में से 60 प्रतिशत संभावित रूप से उद्यमों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। बिग डेटा, क्रेडिट कार्ड नंबर, नशीली दवाइयां, अवैध हथियार, नकली मुद्रा, चोरी की गई सदस्यता के क्रेडेंशियल, हैक किए गए नेटफ्लिक्स समेत अन्य अकाउंट खरीदे जा सकते हैं। यही नहीं, यहां ऐसे सॉफ्टवेयर खरीदे जा सकते हैं जो आपको दूसरे लोगों के कंप्यूटर में सेंध लगाने में मदद करते हैं। हालांकि सब कुछ अवैध नहीं है, डार्क वेब का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है। उदाहरण के लिए आप शतरंज क्लब या ब्लैकबुक में शामिल हो सकते हैं, जिसे टॉर का फेसबुक जैसा एक सोशल नेटवर्क माना जाता है। अगर आपसे संबंधित डार्क वेब पर कोई जानकारी या दस्तावेज मिलते हैं, तो आप इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते, लेकिन कम से कम आपको पता चल जाएगा कि आप जोखिम वाले स्थान पर चिन्हित हैं। अगर आपकी निजी जानकारी या ऐसी कोई जानकारी डार्क वेब पर है, जिससे आपके लिए परेशानी खड़ी हो सकती है, तो आप सूचना एवं प्रौद्यगिकी मंत्रालय के पोर्टल पर या पुलिस को सूचित कर अपना बचाव कर सकते हैं। डीप वेब और डार्क वेब शब्दों का इस्तेमाल कभी-कभी एक-दूसरे के लिए किया जाता है, लेकिन वे एक जैसे नहीं हैं। डीप वेब इंटरनेट पर मौजूद किसी भी ऐसी चीज को संदर्भित करता है जिसे गूगल जैसे सर्च इंजन द्वारा इंडेक्स नहीं किया गया है और इसलिए उस तक पहुंचा नहीं जा सकता। डीप वेब कंटेंट में वह सब कुछ शामिल है जो पेवॉल के पीछे है या जिसके लिए साइन-इन क्रेडेंशियल की आवश्यकता होती है। इसमें वह सभी कंटेंट भी शामिल हैं जिसे उसके मालिकों ने वेब क्रॉलर को इंडेक्स करने से रोक दिया है। मेडिकल रिकॉर्ड, शुल्क आधारित सामग्री, सदस्यता वेबसाइट और गोपनीय कॉर्पोरेट वेब पेज डीप वेब बनाने वाली चीजों के कुछ उदाहरण हैं। अनुमान है कि डीप वेब का आकार इंटरनेट के 96 फीसदी से 99 फीसदी के बीच है। इंटरनेट का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही मानक वेब ब्राउजर के माध्यम से सुलभ है, जिसे आम तौर पर क्लियर वेब के रूप में जाना जाता है। डार्क वेब दरअसल डीप वेब का एक उपसमूह है जिसे जानबूझकर छिपाया जाता है, जिसे एक्सेस करने के लिए एक विशिष्ट ब्राउजर टोर की आवश्यकता होती है। डार्क वेब का आकार वास्तव में कोई नहीं जानता, लेकिन अधिकांश अनुमान इसे कुल इंटरनेट का लगभग 5 फीसदी बताते हैं। डार्क वेब पर नेविगेट करना आसान नहीं है। यह जगह उतनी ही अव्यवस्थित और अस्त-व्यस्त है जितनी आप उम्मीद करेंगे जहां हर कोई गुमनाम है और एक बड़ा वर्ग ठगने के लिए तैयार बैठा हो। डार्क वेब तक पहुंचने के लिए टोर नामक एक अनाम ब्राउजर का उपयोग करना आवश्यक है। टोर ब्राउजर आपके वेब पेज अनुरोधों को दुनिया भर में हजारों यूजर्स द्वारा संचालित प्रॉक्सी सर्वर की एक सीरिज के माध्यम से कनेक्ट करता है, जिससे आपके आईपी एड्रेस को पता लगाना मुश्किल हो जाता है। यह एक छलावे की तरह काम करता है, लेकिन इसका परिणाम एक ऐसा अनुभव होता है जो डार्क वेब जैसा ही होता है- अप्रत्याशित, अविश्वसनीय और चौंकाने वाला। फिर कहना होगा कि डार्क वेब बिटकॉइन की बदौलत फल-फूल रहा है, यह क्रिप्टो-करेंसी है जो दो पक्षों को एक-दूसरे की पहचान जाने बिना भरोसेमंद लेनदेन करने में सक्षम बनाती है। बिटकॉइन डार्क वेब के दायरे को बढ़ाने में एक बड़ा फैक्टर रहा है। लगभग सभी डार्क वेब बिटकॉइन या किसी अन्य रूप में लेनदेन करती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वहां व्यापार करना सुरक्षित है। ऐसी जगह स्कैमर्स और चोरों को आकर्षित करती है, लेकिन जब आपका उद्देश्य बंदूकें या ड्रग्स खरीदना हो तो आप क्या उम्मीद करते हैं। जिस तरह से इंटरनेट की सुविधाएं बढ़ी हैं, आपके मोबाइल पर एक क्लिक से सरकारी योजना, बैंकिंग सेवा, कोई फॉर्म भरना हो या कोई भी अपडेट हो, आप हासिल कर सकते हैं। यह सुविधाएं आपके लिए काफी लाभदायक हैं। लेकिन एक खतरा भी है कि सात समंदर दूर बैठा आदमी भी आप तक सीधे पहुंच सकता है। किसी तरह के साइबर क्राइम को अंजाम दे सकता है। इससे बचने के लिए इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग को यकीनी बनाना होगा।

विशेष लेख

नवजातों का समय से पहले जन्म

भगवती प्र. डोभाल

हाल के अध्ययनों से पता चला है कि भारत में हर घंटे औसतन 345 नवजातों का समय से पहले जन्म हो रहा है यानी मां के गर्भ में शिशु का नौ महीने तक विकास होता है, तब जन्म लेता है, पर अब ऐसी स्थिति में बदलाव हो रहा है, जिससे 'प्री टर्म बर्थ' बढ़ रहे हैं। देखें तो विश्व में हर दो सेकंड में एक नवजात का समय से पहले जन्म हो रहा है। और हर 40 सेकंड में इनमें से एक की मौत हो रही है। इस गंभीर समस्या को फ्लिंडर्स विश्वविद्यालय से जुड़े शोधकर्ता सामने लाए हैं। शोध के निष्कर्ष 'साइंस ऑफ द टोटल एनवायरमेंट' में प्रकाशित हुए हैं। नवजात शिशुओं का समय से पहले मां के गर्भ से बाहर आना जलवायु परिवर्तन के कारण माना जा रहा है। जलवायु में आ रहे ऐसे बदलाव का सीधे तौर पर संबंध बच्चों की सेहत से जुड़ा है। तापमान में निरंतर बढ़ोतरी होने से न केवल प्री टर्म बर्थ हो रहे हैं, बल्कि शिशुओं की मृत्यु दर भी बढ़ रही है। ऐसी ही शेध जर्मनी के पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इंपैक्ट रिसर्च के शोधकर्ताओं ने 29 निम्न और मध्यम आय वाले देशों पर किए। एक शोध के अनुसार, चार प्रतिशत से अधिक नवजातों की मृत्यु जलवायु परिवर्तन की वजह से होने वाले अधिकतम और न्यूनतम तापमान से जुड़ी है। ये निष्कर्ष 'नेचर कम्युनिकेशन' पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार पिछले 18 वर्षों में एक लाख 75 हजार नवजातों की मौत उन 29 निम्न और मध्यम आय वाले देशों में चार फीसद में से औसतन 1.5 फीसद सालाना नवजात मौतें अत्यधिक तापमान से जुड़ी थीं। वहीं करीब तीन फीसद अत्यधिक ठंड से हुई थीं। इसके अलावा, 18 वर्ष की इस अवधि में नवजात शिशुओं में गर्मी से जुड़ी 32 फीसद मौतों के लिए जलवायु परिवर्तन जवाबदेह है। इसका मतलब है कि इस दौरान नवजात शिशुओं की गर्मी से जुड़ी कुल मौतों में से 1 लाख 75 हजार से अधिक मौतें जलवायु परिवर्तन के कारण मानी जा रही हैं। शोध के आंकड़ों के अनुसार, पहले नवजात शिशुओं का जलवायु परिवर्तन की वजह से 2001 से 2019 के दौरान औसत सालाना तापमान में 0.9 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है। दूसरा नवजात शिशुओं की शरीर तापमान नियंत्रण की क्षमता अधूरी होती है। उनका शरीर गर्मी पर काबू पाने के लिए पूरी तरह से विकसित नहीं होता। उच्च चयापचय और पसीने की दर कम होने से उन्हें शरीर से अतिरिक्त गर्मी को निकालना कठिन हो जाता है। तीसरी स्थिति में शोधकर्ताओं का मानना है कि उप-सहारा अफ्रीकी देशों में अत्यधिक तापमान की वजह से नवजात शिशुओं की मौतों पर ग्लोबल वार्मिंग का सबसे अधिक असर देखा गया है। चौथी स्थिति में पाकिस्तान, माली, सिएरा लियोन और नाइजीरिया में तापमान से जुड़ी नवजात शिशु मृत्यु दर सबसे अधिक थीं। इनमें एक लाख जीवित जन्मों में से 160 से अधिक मौत बढ़े हुए तापमान से हुई। 2019 में विश्व भर में 24 लाख नवजात शिशु मौतें हुई। इनमें से 90 फीसद से अधिक नवजात मृत्यु निम्न और मध्यम आय वाले देशों विशेषकर उपसहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया में हुई। मौसम परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है, पर उस परिवर्तन में हम तेजी से बदलने के लिए उत्प्रेरक का काम कर रहे हैं। मनुष्य की इच्छाएं तेजी से बढ़ रही हैं और परिवर्तित भी हो रही हैं। इस परिवर्तन में तेजी लाने का कारण हमारी तकनीकी सहायक हो रही हैं। तकनीकी का विकास मानव मस्तिष्क की खोजी प्रवृति है। इस खोज में हम भूल रहे हैं कि प्रकृति का दोहन एकदम नहीं, बल्कि धीरे-धीरे करना होगा। वैज्ञानिक उपलब्धियों से तो हम दौड़ में आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन इस दौड़ में प्रकृति के साथ संतुलन भी करना होगा। हम इस अच्छी तरह से जानते हैं कि पृथ्वी पर वनस्पतियों और वृक्षों का संतुलित अनुपात में होना आवश्यक है। वन धरती की प्यास बुझाते हैं, लेकिन वनों की हमने कटाई इस तरह से कर दी है कि कार्बन डाइआक्साइड और आक्सीजन का संतुलन ही हम मिटाने पर तुले हैं। मानसून पर ही यदि हम एक दृष्टि डालें, तो पता चलेगा जिन पर्वतों पर वृक्ष और वन होते थे, वे समाप्ति की ओर हैं। पहाड़ों के बड़े वृक्ष भूमि का कटाव नहीं होने देते थे। उनकी जड़ें मजबूती से पहाड़ों की मिट्टी में धंसकर वप्रा के जल को एकदम मैदानों की तरफ नहीं आने देती थीं, जिसकी वजह से नदियों में जलस्तर एक ही बरसात से खतरे से ऊपर नहीं होता था। वह स्थिति आज नहीं रही है। वनों से ऐसे पेड़, जो मैदानी भागों की सुरक्षा कवच का काम करते थे, कट चुके हैं। संतुलित वातावरण कहीं पर नहीं मिल पा रहा है जिसके कारण जिन नवजात पर मृत्यु का कहर ढह रहा है, उसको रोक पाने में हम अक्षम हैं। सरकार कोई भी आए और जाए, जब तक नियोजित विकास का रास्ता नहीं अपनाएंगे तब तक प्राकृतिक आपदाएं मुंह बायें खड़ी रहेंगी।

पार्टियां और नेता अब प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि शत्रु

अजीत द्विवेदी

भारत की राजनीति इतनी विभाजित कभी नहीं रही, जितनी अभी है। पार्टियां और नेता एक दूसरे को अब राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी नहीं मान रहे हैं, बल्कि शत्रु मान रहे हैं। एक समय था जब कहा जाता था कि सब नेता मिले होते हैं। लोग देखते भी थे कि संसद में या विधानसभाओं में या राजनीतिक कार्यक्रमों में एक दूसरे के खिलाफ आग उगलने वाले नेता निजी कार्यक्रमों में एक दूसरे के गले मिलते थे। राजनीति से इतर उनके आपस में अच्छे संबंध होते थे। पक्ष और विपक्ष के नेता आपस में मिलते जुलते थे, बातें करते थे। लेकिन अब यह परंपरा लगभग समाप्त हो गई है। अगर कहीं पक्ष और विपक्ष के नेताओं के एक दूसरे के प्रति सद्भाव दिखाने की तस्वीरें या खबरें आती हैं तो आश्चर्य ही होता है। ऐसी तस्वीरें आने पर नेता घबरा भी जाते हैं कि कहीं उनके आलाकमान को यह बात बुरी न लग जाए। असल में चुनावी फायदे के लिए वैचारिक और राजनीतिक विभाजन को निजी शत्रुता में बदलने की वजह से ऐसा हुआ। पिछले कुछ समय से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष के नेताओं को दुश्मन मान कर उनके खिलाफ एक सतत चलने वाले अभियान की शुरुआत की। उन्होंने नेताओं को भ्रष्ट, परिवारवादी और निकम्मा ठहराना शुरू किया। इससे उनकी पार्टी के नेताओं की मजबूरी हो गई कि वे कांग्रेस और दूसरी भाजपा विरोधी पार्टियों के नेताओं से दूरी बनाएं। धीरे धीरे ऐसी स्थिति आ गई, जब भाजपा के नेता बढ़ चढ़ कर विपक्षी नेताओं को गालियां देने लगे ताकि अपनी स्वामीभक्ति साबित की जा सके। तो दूसरी ओर राहुल गांधी और विपक्ष के अन्य नेताओं ने नीतियों और सरकार के कामकाज की बजाय नरेंद्र मोदी को शत्रु मान कर सिर्फ उन्हीं को निशाना बनाने की रणनीति अपना ली। पार्टियों और नेताओं के बीच शुरू हुआ यह विभाजन अब जमीनी स्तर पर मतदाताओं तक पहुंच गया है। अब नेता अपने खिलाफ मतदान करने वालों को अपना दुश्मन बताने लगे हैं और खुल कर कहने लगे हैं कि वे उन लोगों का काम नहीं करेंगे, जिन्होंने उनको वोट नहीं दिया। इसकी तीन मिसालें हैं, जो हाल की हैं। बिहार की सीतामढ़ी लोकसभा सीट से चुनाव जीते जनता दल यू के देवेश चंद्र ठाकुर ने नतीजों के बाद कहा कि वे मुस्लिम और यादव लोगों के काम नहीं करेंगे क्योंकि उन्होंने उनको वोट नहीं दिया है। उन्होंने कहा कि मुस्लिम और यादव उनके पास आएंगे तो वे उनको चाय पानी करा देंगे लेकिन काम नहीं करेंगे। इसके बाद झारखंड की गोड्डा सीट से जीते भाजपा के निशिकांत दुबे ने कहा कि जिन मतदान केंद्रों पर भाजपा को 60 फीसदी या उससे ज्यादा वोट मिले हैं वहां सामुदायिक केंद्र बनाए जाएंगे, जिनकी लागत 50 से 60 लाख रुपए होगी। तीसरी मिसाल उत्तर प्रदेश की नतौर विधानसभा सीट से जीते भाजपा के ओम कुमार का है, जिन्होंने कहा है कि वे उन लोगों का काम नहीं करेंगे, जिन्होंने उनको वोट नहीं दिया है। वे नगीना सीट से लोकसभा का चुनाव लड़े थे और हार गए थे। ये तीन प्रतिनिधि घटनाएं हैं, जिनसे पता चलता है कि राजनीतिक विभाजन किस स्तर तक पहुंच गया है। संसद और विधानसभाओं की राजनीति तो एरिना में ग्लैडियटर्स की लड़ाई में पहले ही बदल गई थी अब जमीनी राजनीति और मतदाता भी पार्टी लाइन पर बांटे जाएंगे। वैसे ही जैसे दुनिया भर में फुटबॉल के प्रशंसक बने हैं। सबकी अपनी पसंदीदा टीम होती है, जिसके जीतने पर वे जश्न मनाते हैं और हारने पर मारपीट करते हैं। क्या इसी तरह से अब देश में लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों में होगा? जीता हुआ नेता उन लोगों के काम नहीं करेगा, जो उसकी पार्टी के या उसके विरोधी होंगे! इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम ने अब उम्मीदवारों को यह सुविधा उपलब्ध करा दी है कि उन्हें पता होगा कि किस बूथ पर उन्हें कितने वोट मिले हैं। पहले जब बैलेट से चुनाव होता था तो कई बूथों के बैलेट एक साथ मिला दिए जाते थे और तब उनकी गिनती होती थी, जिससे बूथवार डाटा नहीं मिल पाता था। बहरहाल, ईवीएम की इस सुविधा का लाभ उठा कर सांसद और विधायक उन मतदान केंद्रों की पहचान कर सकते हैं, जहां उनको कम वोट मिले हैं या नहीं मिले हैं और फिर उनके साथ विकास के कार्यों में भेदभाव कर सकते हैं। लेकिन क्या ऐसा करना शपथ का उल्लंघन नहीं होगा? लोकसभा के लिए चुने गए सदस्यों की शपथ का प्रारूप इस प्रकार होता है, 'मैं, अमुक, जो लोक सभा का सदस्य निर्वाचित या नाम निर्देशित हुआ हूं सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञान करता हूं या ईश्वर की शपथ लेता हूं कि मैं विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा रखूंगा, मैं भारत की प्रभुता और अखंडता अक्षुण्ण रखूंगा तथा जिस पद को मैं ग्रहण करने वाला हूं उसके कर्त्तव्यों का श्रद्धापूर्वक निर्वहन करूंगा'। राज्यसभा, विधानसभा और विधान परिषद के लिए चुने गए या मनोनीत किए गए सदस्यों के लिए भी यही प्रारूप होता है। इसमें साफ साफ लिखा गया है कि चुना गया सदस्य देश के संविधान के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा रखेगा। ध्यान रहे भारत का संविधान सभी नागरिकों की समानता की बात करता है और किसी भी आधार पर भेदभाव को निषिद्ध करता है। ऐसे में संविधान को मानने वाला कोई भी व्यक्ति यह कैसे कह सकता है कि वह एक वर्ग के लिए काम करेगा और दूसरे के लिए नहीं करेगा? यहां एक तकनीकी पहलू है, जिसका इस्तेमाल खुलेआम भेदभाव की बात करने वाले सांसदों और विधायकों के बचाव में किया जा सकता है। वह पहलू यह है कि मंत्रियों के शपथ में एक अतिरिक्त लाइन यह जोड़ी जाती है कि, 'मैं संविधान और विधि के अनुसार सभी प्रकार के लोगों के साथ भय या पक्षपात, अनुराग या द्वेष के बिना अच्छा व्यवहार करूंगा'। यह लाइन सांसदों और विधायकों की शपथ में नहीं होती है। क्या इससे सांसदों और विधायकों को यह छूट मिल जाती है कि वे भेदभाव कर सकें?

भारत को प्रभावी जनसंख्या नीति की जरूरत

सत्यपाल वशिष्ठ

हमें केरल राज्य के लोगों से शिक्षा भी लेनी चाहिए, जहां जनसंख्या ज्यादा है, परंतु स्थिर है क्योंकि सभी लोग छोटे परिवार को अपनाते हैं। इसकी जड़ों में शिक्षा ही महत्वपूर्ण है। औरतें ही अपने परिवार का आकार छोटा रखती हैं क्योंकि वो सब शिक्षित है वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या 8118835999 है जो वर्ष 2023 से 0.91 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी है। इसी अवधि में भारत की जनसंख्या 1441719812 है जो वर्ष 2023 से 0.92 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी है। भारत जनसंख्या के हिसाब से चीन को पीछे छोड़ कर विश्व में पहले नंबर पर आ गया है। चीन की वर्तमान जनसंख्या 1425181397 है। जनसंख्या में वृद्धि संसाधनों और सेवाओं पर दबाब डालती है। माल्थस थ्योरी के अनुसार जनसंख्या की वृद्धि ज्यामिति प्रगति से बढ़ती है तथा खाद्य उत्पादन केवल अंकगणितीय रूप से बढ़ता है। मतलब आर्थिक संसाधनों में वृद्धि की गति काफी कम होती है और जनसंख्या वृद्धि बहुत ज्यादा होती है। जनसंख्या वृद्धि का भार वर्तमान संसाधनों पर पड़ता है जिससे अकाल जैसी स्थिति भी पैदा हो सकती है, अगर उत्पादकता को जनसंख्या की वृद्धि के हिसाब से न बढ़ाया जाए। बढ़ती आबादी से गरीबी और असमानता बढ़ती है। शिक्षा का बुनियादी ढांचा बढ़ती आबादी की जरूरतों से जूझ रहा होता है तथा स्वास्थ्य व्यवस्था पर बोझ बढ़ जाता है, जिससे गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच एक चुनौती बन जाती है। बढ़ती आबादी से शहरीकरण को बढ़ावा मिलता है जिससे मूलभूत आवश्यकताओं और आधारभूत सरंचनाओं पर दबाव बढ़ता है तथा रोजगार के अवसर और परिवहन सुविधाएं प्रभावित होती हैं। प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ती आबादी के बोझ से पर्यावरणीय चिंताएं बढ़ जाती हैं क्योंकि संसाधनों का अंधाधुंध दोहन होता है। ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन में तेजी आती है जिससे जल की उपलब्धता भी कम हो जाती है। 2050 तक विश्व की अनुमानित जनसंख्या 9.7 बिलियन तथा जीवन प्रत्याशा 72.6 से बढ़ कर 77.1 वर्ष हो जाएगी। इससे संसाधनों की कमी के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं। इसलिए विश्व जनसंख्या दिवस जनसंख्या संबंधी मुद्दों और सतत विकास पर उनके प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 11 जुलाई को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1989 में स्थापित यह परिवार नियोजन, लैंगिक समानता, गरीबी उन्मूलन, मातृ स्वास्थ्य, मानवाधिकारों के महत्व को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। विश्व जनसंख्या दिवस पर हर साल नया थीम घोषित किया जाता है। इसी के अनुसार पूरे विश्व में जागरूकता अभियान चलाया जाता है तथा इस दिशा में कार्य किया जाता है। वर्ष 2024 का थीम हमें याद दिलाता है कि समस्याओं को समझने, समाधान तैयार करने और प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए डेटा संग्रह में निवेश करना महत्वपूर्ण है। वित्त भी वैसा है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष ने स्टेट ऑफ वर्ल्ड पापुलेशन रिपोर्ट जारी की। इसके अनुसार वर्ष 2010 से 2019 के बीच भारत की जनसंख्या में 1.2 प्रतिशत की औसत वृद्धि हुई है। यह वृद्धि चीन की औसत वार्षिक वृद्धि दर से दुगनी से भी अधिक है, जो चिंतनीय है। भारत में शहरीकरण, साक्षरता दर के बढऩे, देरी से विवाह, एक बच्चा या बच्चा न करने का संकल्प, औरतों का नौकरी करना, आर्थिक मजबूरी के कारण एक बच्चा, बच्चों की मृत्यु दर में गिरावट आदि से प्रजनन दर कम हो गई है। प्रजनन दर 1950 में 6.18 बच्चे थी जो 2021 में 1.91 रह गई है जो 2.1 के आवश्यक स्तर से भी कम है। कम प्रजनन दर के दीर्घ समय में भारत की जनसंख्या गतिशीलता पर प्रभाव पड़ेंगे, जो सोचनीय विषय है। भारत अभी युवा देश है। यहां 27 वर्ष तक की आयु वाली आधी आबादी है तथा 27 वर्ष से ऊपर वाली भी आधी आबादी है। भारत को युवा कार्यबल की आबादी, बुजुर्गों की आबादी से ज्यादा ही बनाए रखनी है। इसलिए भारत को मौजूदा जनसंख्या नीति की पड़ताल करनी चाहिए और बढ़ती जनसंख्या के बारे में सरकार को गंभीरता से लेकर इसे नियंत्रित करने के लिए कारगर कदम उठाने चाहिए। भारत में जनसंख्या वृद्धि ने प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव डाला है जिससे पानी की उपलब्धता मांग के बढऩे के कारण कम हो रही है। भारत में 766 जिलों में से 266 जिलों में पानी की कमी हो गई है। दिल्ली, बेंगलुरु तथा अन्य राज्यों में पानी के लिए लोग तड़प रहे हैं। जनसंख्या बढ़ रही है, परंतु जल संसाधन वही हैं। जनसंख्या वृद्धि से शहरीकरण बढ़ जाता है जिससे ठोस अपशिष्ट 0.3 किलोग्राम प्रति व्यक्ति प्रति दिन पैदा हो रहा है जो वर्तमान 50 करोड़ शहरी आबादी का 150000 टन प्रति दिन है। यह विकसित देशों से तीन गुणा अधिक है। शहरों के बाहर कचरा भराव क्षेत्र ने पहाड़ों का रूप ले लिया है। ये कचरे के पहाड़ टोक्सिन का रिसाव भूतल पानी में भेजते हैं। भारत ने 2047 तक विकसित भारत बनने का लक्ष्य रखा है। 23 वर्ष में वर्तमान जीडीपी 3.73 ट्रिलियन से 30 ट्रिलियन तक लानी है। इसके लिए परिवार नियोजन ही जनसंख्या वृद्धि को कम करने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति है। जिम्मेदार परिवार नियोजन प्रयासों को बढ़ावा देकर जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए भारत सरकार ने 2024-25 के अंतरिम बजट में एक कमेटी बनाने की घोषणा की है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, मंगलवार 16 जुलाई 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने एचडीएफसी बैंक की नई शाखा का किया उद्घाटन

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने आज राजधानी रायपुर के शंकर नगर में एचडीएफसी बैंक की नई शाखा का उद्घाटन किया। उन्होंने बैंक के अधिकारियों और खाताधारकों को बधाई देते हुए कहा कि एचडीएफसी बैंक ने कम समय में ही अपनी सेवाओं से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति हासिल की है। किसी संस्थान के उत्कृष्ट प्रदर्शन में टीम-वर्क की अहम भूमिका होती है। उन्होंने उम्मीद जताई कि एचडीएफसी बैंक के अधिकारी और कर्मचारी अपनी बेहतर टीम-वर्क से रायपुरवासियों को अच्छी सेवाएं प्रदान करेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने विश्वास जताया कि एचडीएफसी बैंक से बैंकिंग सेवाओं की जरूरत वाली योजनाओं में राज्य सरकार और हितग्राहियों को पूर्ण सहयोग मिलेगा। बैंक के क्षेत्रीय प्रमुख श्री इकबाल सिंह ने उद्घाटन कार्यक्रम में एचडीएफसी बैंक के पिछले 30 वर्षों के सफर की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शंकर नगर की यह नई शाखा छत्तीसगढ़ में बैंक की 204वीं और रायपुर शहर की 30वीं शाखा है। बैंक के सर्किल प्रमुख श्री दीपक अग्रवाल, श्री विकास गोयल, श्री सुबीर बनर्जी और शाखा प्रबंधक श्री रवीश शाह भी उद्घाटन के मौके पर मौजूद थे।

शिक्षकों के सेमीनार में मुकेश शाह ने कहा-शिक्षक का आभूषण है धैर्य

रायपुर (विश्व परिवार)। प्ले होम हाईट्स स्कूल, सड्डू में शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम ट्रेन द टीचर्स का आयोजन किया गया। इसमें

मुख्य वक्ता के रूप में शिक्षाविद् मुकेश शाह ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों की भूमिका बच्चों, अभिभावकों व सहयोगी शिक्षकों के साथ व्यवहार, क्लास रूम मैनेजमेंट, स्वआकलन शैक्षिक वातावरण आदि पर विस्तार से अपनी बातें रखी। मां सरस्वती की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। गायत्रीशिक्षण समिति के अध्यक्ष व स्कूल संचालक मुकेश जैलवाल ने प्रशिक्षक का स्वागत किया। प्राचार्या शिवानी जैलवाल ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। प्रधान पाठिका कमरून्निशा ने स्वागत कर स्मृति चिह्न प्रदान किया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुकेश शाह ने कहा कि शिक्षक को हमेशा बहुत धैर्य धारण करके परिणाम की चिंता किए बगैर छात्रों के शैक्षणिक विकास के लिए प्रयास में कोई कमी नहीं करना चाहिए। कई बार उनके सामने विद्यार्थियों की पढ़ाई, व्यवहार, आचरण को लेकर बड़ी विकट स्थिति हो जाती है कि उनको समझाने के लिए उग्रता को प्रकट करें या नरमाई से पेश आए. किन्तु ऐसे समय में टीचर्स को धैर्य का साथ न छोड़ते हुए नम्रता को अपना आभूषण बना लेना चाहिए । वर्ष भर टीचर को पढ़ाने के बाद उनको बच्चों के परीक्षा परिणाम के प्रति भी धैर्य रखना पड़ता है। छात्रों को समझने के लिए उनसे बात करना, उनकी बात को धैर्य से सुनना व उचित सलाह देकर उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। विद्यार्थियों के मानसिक स्थिति को समझकर उनको यथोचित मानसिक सहयोग भी करना चाहिए। टीचर्स को छात्रों के मामले में हमेशा आशावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए सकारात्मकता के साथ प्रयास करना चाहिए। जरूरी नहीं कि प्रत्यके विद्यार्थी पढ़ाई में अव्वल या होशियार रहे। क्लास रूम में छात्रों के सामने हमेशा सकारात्मक बात करके विद्यार्थियों के गुणों की तारीफ करते रहना चाहिए। आखरी बेंच में बैठे विद्यार्थी के आत्मविश्वास में कमी ना हो, इस बात का ध्यान भी टीचर्स को रखते हुए ऐसे विद्यार्थियों का मनोबल बनाए रखना चाहिए।

दीर्घ तपस्वी श्री विराग मुनि जी के मंगल प्रवेश पर निकली भव्य शोभायात्रा

सदर बाजार जैन मंदिर से एमजी रोड स्थित दादाबाड़ी तक जिन शासन की हुई जय-जयकार, रायपुर श्रीसंघ को प्राप्त हुआ चातुर्मास 2024 का सौभाग्य

दीर्घ तपस्वी श्री विरागमुनि जी ने 121 उपवास कर किया पारणा

रायपुर (विश्व परिवार)। सदर बाजार जैन मंदिर से एमजी रोड स्थित दादाबाड़ी तक आज भव्य शोभायात्रा निकाली गई। रास्ते भर में जिन शासन के जयकारे गूंजते रहे और गुरुभक्ति का उल्लास छाया रहा। वरघोड़े के साथ हाथी, घोड़े और ऊंट की पालकी यात्रा के साथ चलती रही। गुरू के सम्मान में महिलाओं ने अपने सिर पर कलश लेकर मंगल कलश यात्रा निकाली, जो शोभायात्रा के साथ चल रहीं थी। जैन संत श्री विरागमुनि जी के प्रवेश के दौरान दादाबाड़ी में सुमधुर संगीतमयी प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केंद्र रही। भजनों की प्रस्तुति को मुनिश्री ने आत्मजागृती का अलार्म बताया। मंगल प्रवेश के बाद मुनिश्री ने भगवान धर्मनाथ मंदिर के दर्शन किये और फिर प्रवचन स्थल पर अपना आसन ग्रहण किया। इसके साथ ही उन्होंने अपना 121 उपवास पूरा कर सोमवार को पारणा किया। आत्मस्पर्शी चातुर्मास 2024 के पदाधिकारियों ने रायपुर श्रीसंघ को चातुर्मास प्राप्त होने आभार जताया।

इस दौरान मुनिश्री ने कहा कि जैसे जन्म मृत्यु निश्चित है वैसे ही संतों का चातुर्मासिक प्रवेश और उनकी गोचरी भी निश्चित है। आज भगवान धर्म नाथ के मंदिर में मंगल प्रवेश के दौरान हुई वह संगीतमय प्रस्तुति खुद को आत्मजागृत करने का अलार्म है। यह प्रवेश शब्द हम रोज उपयोग करते हैं। हमने अपने जीवन काल में 84 लाख योनियों में प्रवेश किया। कभी स्कूल में प्रवेश किया, कभी कॉलेज में प्रवेश किया, कभी डॉक्टरी की पढ़ाई में प्रवेश किया तो कभी इंजीनियरिंग और सीए की पढ़ाई में प्रवेश किया। हम रोज घर में प्रवेश करते हैं, ऑफिस में प्रवेश करते हैं जबकि हमें ऐसे स्थान पर प्रवेश करना है, जहां केवल एक बार प्रवेश करना पड़े बार-बार नहीं।

उन्होंने आगे कहा कि चातुर्मास की जिनवाणी सिर्फ श्रवण का कार्य नहीं है। जिनवाणी हमारे जीवन का एक आधार है। सुनना और सुनकर उसे अपने जीवन में उतारना। आप जिनवाणी को आचरण में नहीं ले पा रहे तो जीवन की गाड़ी सुचारू रूप से नहीं चल पाएगी। वैसे ही परमात्मा की वाणी को सिर्फ बाहर से सुनना नहीं है। उनकी वाणी को आप जितना अपने जीवन में उतारते गए, उतना आप जीते गए। चातुर्मास का मतलब यह है कि इस चार महीने में बाहर के सांसारिक जीवन की गतिविधियां लगभग बंद हो जाती है। जैसा कि बाहर आना-जाना, शादी समरोह, संबंध आदि कार्यक्रम चार महीने बंद हो जाते है और वहीं, धर्म की लाइन ऑन कर दी जाती है। अब इस चार महीने में क्या करेंगे। इन चार महीने अपने करीब रहना है। अपने जितने निकट रहोगे आप परमात्मा महावीर के उतने ही प्रिय बनोगे।

श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष विजय कांकरिया और कार्यकारी अध्यक्ष अभय कुमार भंसाली ने बताया कि दादाबाड़ी में सुबह 8.45 से 9.45 बजे मुनिश्री का प्रवचन होगा। आप सभी से निवेदन है जिनवाणी का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

वर्षायोग धीमी वर्षा के समान जो जीवन की दशा व दिशा ने उपयुक्त परिवर्तन करती है : आर्यिका वर्धस्व नंदनी

तिजारा में हुआ इस वर्ष का पहला वर्षायोग कलश स्थापना समारोह

तिजारा (विश्व परिवार)। वर्षायोग में सन्त सम्यक दिशा व दशा परिवर्तन का मार्ग बताते हैं वैसे भी कहा गया है कि कुछ देर की तेज बारिश का सारा जल व्यर्थ बह जाता है और कम फायदा करता है जबकि धीमी बारिश का जल जमीन के अंदर तक अपनी गहरी पहुँच बनाता है और फसलों के लिए भी उपयुक्त रहता है उसी प्रकार कुछ समय के लिए सन्तों का आगमन तेज वर्षा के समान है जबकि वर्षायोग में सन्तो का आगमन धीमी बारिश के समान है जो सुखद व अमृत वर्षा होती है और जीवन की अनन्त शून्यता व रिक्तता को समाप्त कर उपयुक्त परिवर्तन करती है। अत: वर्षायोग की धीमी फुहारों में आवश्यक रूप से भीगना चाहिए और अपने जीवन को सम्यक व सदमार्ग की ओर अग्रसर करना चाहिए यही वर्षायोग की सार्थकता है।

उक्त उद्गार श्री 1008 चन्द्रप्रभु अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में आयोजित दसवें वर्षायोग कलश स्थापना समारोह में आचार्य वसुनंदी महाराज की सुशिष्या आर्यिका वर्धसवनंदनी माताजी ने श्रावक श्राविकाओं को वर्षायोग का महत्व समझाते हुए व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि श्रमण व समाज जिनशासन रूपी रथ के दो पहिये हैं। दोनो के बराबर चलने से ही यह रथ आगे बढ़ सकता है अत: साधु और समाज के बराबर योगदान की आवश्यकता है।कहीं भी थोड़ी शिथिलता जिनशासन रथ को आगे बढ़ने में रुकावट उत्पन्न करती है। -**अभिषेक जैन लुहाड़िया**

प्राइवेट नौकरी वाले के पास कोई अधिकार नहीं होते, मुनि श्री सुधासागर जी महाराज चातुर्मास सागर में होने की संभावना

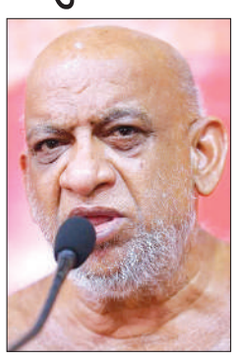

सागर (विश्व परिवार)। सरकारी नौकरी करने वालों से मैने पूछा कि कार्य करने मे नौकरी की अनुभूति होती है। या अधिकारी बनने की, प्राइवेट नौकरी करने वाले के पास कोई अधिकार नहीं होते सिर्फ मालिक का काम करना होता है।अपनी आजीवीका लिये तुम्हें दूसरों के यहां नौकरी करना पड़े तुम बदकिस्मत हो, व्यक्तियों को खुद का कार्य करना चाहिए।नौकरी में हमारी शक्ति खराब हो जाती है क्योंकि हमें अनुभूति होती है कि हम नौकर हैं। सरकारी नौकरी में अधिकार होता है इसलिए सरकारी नौकर को अधिकारी कहते हैं सरकारी नौकर समाज के लिए, खुद के लिए और पूरे देश को कुछ न कुछ करता रहता है क्योंकि उसके पास अधिकार होते हैं। एक बार स्वयं अनुभूति करके देखो मेरे हाथ में भी कुछ है। उसके पास स्व की अनुभूति नहीं है वहां मेरा आशीर्वाद व्यर्थ जाता है।

यह उदगार पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव 108 सुधा सागर महाराज ने व्यक्त किए मुनिश्री ने कहा जब बुरे दिन आते हैं तो तुम मंदिर जाते हो, गुरुदेव के पास जाते हो। भगवान का नाम लेते हो क्योंकि संकट आया है भक्तामर पाठ, णमोकार मंत्र पढ़ते हो। एक बात याद रखना मरने के पहले णमोकार मंत्र पढ़ने का काम ज़रूर करना। उन्होंने कहा कि जब कोई कष्ट या समस्या हो तो प्रभु के सामने जाकर के यह कहना कि मै दुर्भाग्यशाली था कि आपके पास नहीं आया और अब मैं भाग्यशाली हूं इसलिए प्रभु के और गुरु के पास में आया हूँ। मरने वालो मैं मरने का महुर्त निकाल देता हूँ। जिन के मुहूर्त निकाले है लेकिन वे आज तक नही मरे है। बल्कि बढ़िया फल फूल रहे हैं। दुनिया की सबसे बड़ी ताकत हिन्दी के 52 अक्षर है। बस वे अक्षर जुड़ किससे रहे हैं इसके ऊपर सब कुछ निर्भर करता है वही मन्त्र बन जाते है बीजाक्षर हो जाते हैं और बालक पढता है तो सिर्फ शब्द रह जाते हैं।

धर्म है तो मान लो भगवान नहीं, धर्म है मान लो महाराज नहीं है। धर्म में इसी प्रकार भारत कहीं नहीं है जिस स्थान पर खड़े वही भारत है इसी प्रकार सागर कहीं नहीं है जिस स्थान पर खड़े हो वह सागर है।

मुनिश्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य राजेन्द्र, विकास जैन केसली और राजकुमार करैया नीलेश चौधरी परिवार को प्राप्त हुआ। जानकारी देते हुए मुकेश जैन ढाना ने बताया की मुनि संघ का 2024 का वर्षायोग चातुर्मास सागर में होने की संभावना है। -**अभिषेक जैन**

श्रद्धा महिला मण्डल द्वारा ई-रिक्शा एवं दिव्यांगजनों को ट्राईसाइकिल वितरित किया गया

कोल इंडिया से पधारीं सिलोस अध्यक्षा श्रीमती विमला प्रसाद के मुख्य आतिथ्य में कार्यक्रम आयोजित

बिलासपुर (विश्व परिवार)। श्रद्धा महिला मंडल द्वारा नारी एवं दिव्यांग सशक्तीकरण के अभिनव प्रयासों में एक और अध्याय जोड़ते हुए आज दिनांक 14 जुलाई 2024 को 10 ट्राईसाइकिल एवं 11 ई-रिक्शा प्रदान किए गए। कोल इंडिया से पधारीं कोल इंडिया ऑफिसर्स वाइव्स समिति (सिलोस) की अध्यक्षा श्रीमती विमला प्रसाद के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम में सिलोस की सम्मानीय सदस्याएँ श्रीमती रिंकी नंदा, श्रीमती अर्चना चौधरी, श्रीमती नंदिनी त्रिपाठी साथ ही श्रद्धा महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती पूनम मिश्रा तथा उनकी सहयोगी श्रीमती संगीता कापरी, श्रीमती राजी श्रीनिवासन, श्रीमती अनीता फ्रैंकलिन, श्रीमती इप्सिता दास और कमिटी की अन्य सदस्याएं उपस्थित रहीं।

आज आयोजित कार्यक्रम में 10 दिव्यांगजनों को ट्राइसाइकिल प्रदान की गई जिसमें मुख्यालय बिलासपुर से 6 हितग्राही एवं संचालन क्षेत्रों के 4 हितग्राही शामिल रहे इनमें 4 महिलाएं शामिल रहीं। वहीं 11 जरूरतमंदों को ई-रिक्शा प्रदान किए गए जिसमें मुख्यालय से 8 एवं संचालन क्षेत्रों से 3 हितग्राही शामिल रहे जिनमें 10 महिला हितग्राहियों को रिक्शा प्रदान किया गया। ई-रिक्शा एवं ट्राइसाइकिल पाकर सभी हितग्राही बेहद खुश नज़र आए। दिव्यांग लाभार्थियों ने कहा कि ट्राइसाइकिल मिलने से उन्हें आने-जाने में सुविधा मिलेगी साथ ही रोजगार पाने में आसानी होगी। ई-रिक्शा लाभार्थियों ने कहा कि पहले किराए पर रिक्शा लेकर चलाने में उन्हें आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ता था लेकिन खुद का ई-रिक्शा मिल जाने से वे अब खुद की एवं अपने परिवार की बेहतर तरीके से देखभाल कर पाएँगी। साथ ही आज के कार्यक्रम में एसईसीएल मुख्यालय एवं दोनों कॉलोनियों में कार्यरत 80 से अधिक महिला सफाईकर्मियों को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा सम्मानित कर उनकी हौसलाअफजाई की।

इससे पहले कल दिनांक 13 जुलाई 2024 को सखी स्नेह मिलन 2024 कार्यक्रम का आयोजन कोल इंडिया से पधारीं कोल इंडिया ऑफिसर्स वाइव्स समिति (सिलोस) की अध्यक्षा श्रीमती विमला प्रसाद के मुख्य आतिथ्य एवं समिति के सम्मानीय पदाधिकारीगणों, श्रद्धा महिला मण्डल अध्यक्षा श्रीमती पूनम मिश्रा एवं मण्डल की अन्य सदस्याओं की उपस्थिति में किया गया।

कार्यक्रम में श्रद्धा महिला मण्डल मुख्यालय बिलासपुर एवं एसईसीएल संचालन क्षेत्रों की समितियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गयी जिसमें गीत-संगीत, नृत्य, नाटक आदि की प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया।

एसईसीएल प्रायोजित नि:शुल्क इण्डस्ट्रियल प्रशिक्षण और रोजगार

रायपुर (विश्व परिवार)। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत आने वाले केन्द्रीय पेट्रोरसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट), रायपुर में साऊथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (SECL), बिलासपुर द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के (जिले-कोरबा, रायगढ़, सूरजपुर, कोरिया, सरगुजा, बलरामपुर, बिलासपुर) एवं मध्यप्रदेश राज्य (जिले-अनुपपुर, शहडोल, उमरिया) के एसईसीएल खनन प्रभावित क्षेत्रों के युवाओं को 6 माह का नि:शुल्क कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार के अवसर प्रदान किये जा रहे है। जिसके सफल छात्रों को उद्योगों में रू. 2.00 लाख से लेकर रू. 2.50 लाख तक के सालाना पैकेज में अभी तक रोजगार दिलाये जा चुके है। इस रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम को 1200 छात्र-छात्राओं हेतु आयोजित किया जा रहा है तथा अभी तक 800 छात्र-छात्राओं ने इस कार्यक्रम का लाभ ले लिया है। वर्तमान में 400 वैकेन्सी हेतु उचित लाभार्थियों के लिए चयन प्रक्रिया जारी है, जिसके लिए खनन प्रभावित जिलों में साक्षात्कार कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। इस हेतु जनपद पंचायत कार्यालय, बिल्हा, बिलासपुर में दिनांक 15.07.2024 को प्रात: 10:00 बजे से 4:00 बजे तक, जनपद पंचायत कार्यालय, लखनपुर, सरगुजा में दिनांक 16.07.2024 को प्रात: 10:00 बजे से 4:00 बजे तक, लाईवलीहुड कॉलेज, अंबिकापुर, सरगुजा में दिनांक 18.07.2024 को प्रात: 10:00 बजे से 4:00 बजे तक, जनपद पंचायत कार्यालय, तखतपुर में 18.07.2024 प्रात: 10:00 बजे से 4:00 बजे तक, शासकीय महाविद्यालय, सिलफीली, विश्रामपुर, सूरजपुर में 19.07.2024 प्रात: 10:00 बजे से 4:00 बजे तक। इसके अतिरिक्त खनन प्रभावित जिले के इच्छुक उम्मीदवार सिपेट, रायपुर में जाकर किसी भी कार्य दिवस में पंजीयन करा सकते है, पंजीयन की प्रक्रिया में पहले आने वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जायेगी।

स्टेट लोड डिस्पैच सेंटर से किया गया ब्लैक स्टार्ट मॉकड्रिल, कोरबा के बिजलीघरों को पुन: संचालित करने बांगो से भेजा गया पॉवर

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश में आकस्मिक ब्लैक आउट होने की स्थिति में ताप विद्युत गृहों को पुर्नसंचालित करने हेतु हसदेव बांगो जल विद्युत गृह से स्टार्ट अप पॉवर सप्लाई करने संबंधी एक मॉकड्रिल (पूर्वाभ्यास) छत्तीसगढ़ स्टेट लोड डिस्पैच सेंटर में सफलतापूर्वक किया गया। मॉकड्रिल के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया कि आपात स्थिति में पॉवर प्लांट के ब्लैक आऊट होने पर कोरबा पश्चिम के बिजली संयंत्रों को शुरू करने हेतु लगभग 43 मिनट में जल विद्युत संयंत्रों से बिजली पहुंचाई जा सके। गौरतलब है कि अचानक ब्लैक आऊट होने की स्थिति में पावर प्लांटों को फिर से स्टार्ट करना कठिन होता है, इसके लिए तुरंत बिजली की आवश्यकता पड़ती है, जिसकी तत्काल आपूर्ति जल विद्युत संयंत्रों से ही हो सकती है। 12 जुलाई को यह मॉक ड्रिल छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन एवं उत्पादन कम्पनी के प्रबंध निदेशक क्रमश: श्री आर0 के0 शुक्ला तथा श्री संजीव कुमार कटियार की उपस्थिति एवं कुशल मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

इंडियन इलेक्ट्रिसिटी ग्रिड कोड और स्टेट ग्रिड कोड के प्रावधानों के अनुसार साल में एक बार इस तरह का मॉकड्रिल करना होता है। इस दौरान डंगनिया स्थित स्टेट लोड डिस्पैच सेन्टर में कार्यपालक निदेशक सर्व श्री के0 एस0 मनोठिया एवं श्री एम0 एस0 कंवर, मुख्य अभियंता श्री के0 के0 भगत, अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्रीमती शारदा सोनवानी, श्री राकेश शर्मा, अधीक्षण अभियंता श्री मनोज राय, श्री संजय चैधरी, श्री अभिषेक जैन, श्री संजय वैद्य, श्री एम0 नायक, श्रीमती माया नायर, श्रीमती पुष्पा पिल्लई कार्यपालन अभियंता श्री जी0पी0सिंह, श्री धर्मजीत भट्ट, श्री मनोज रावटे, सुश्री सुदेशना पॉल, सुश्री नमिता विभा लकरा, श्री अवनीश जोशी, सहायक अभियंता श्री केतन मिश्रा, श्री विन्ध्याचल गुप्ता, श्रीमती प्रीति गुप्ता, सुश्री जुवेना गोम्स, श्रीमती रेखा शर्मा, सुश्री संदीपा देवॉगन, कनिष्ठ अभियंता श्री शुभम घोरे आदि उपस्थित थे।

राज्य भार प्रेषण केन्द्र के नियंत्रण कक्ष में ड्युटी पर उपस्थित कार्यपालन अभियंता श्री जी0 आर0 नवरंग, श्री रंजीत कुजुर, सहायक अभियंता श्री संदीप देवॉगन एवं तकनीकी सहायक श्री दिनेश विश्वकर्मा का मॉकड्रिल को सम्पन्न कराने में सक्रिय एवं महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इसी तरह बांगो जल विद्युत संयंत्र के अधीक्षण अभियंता श्री बी0 आर0 भगत, श्री एस0 के0 रहमतकर एवं उनकी टीम, विद्युत गृह कोरबा पश्चिम में अधीक्षण अभियंता श्री एस0 करकरे एवं उनकी टीम, कोरबा पूर्व में पारेषण संकाय से अधीक्षण अभियंता श्री डी0एस0 पटेल एवं उनकी टीम, वितरण संकाय से अधीक्षण अभियंता श्री पीएल सिदार एवं उनकी टीम, संचार एवं टेलीमीटरी संकाय से कार्यपालन अभियंता श्रीमती अजय कंवर एवं उनकी टीम, उत्पादन कॉपनी से कार्यपालन अभियंता श्री आनंद कुमार एवं श्री सुरेश साहू की सक्रिय भूमिका इस मॉकड्रिल को सम्पन्न कराने में रही है।

ऐसे पूरी हुई मॉकड्रिल की प्रक्रिया- मॉक ड्रिल के दौरान सर्वप्रथम बांगो जल विद्युत गृह, छुरीखुर्द, जमनीपाली एवं कोरबा पूर्व के उपकेन्द्रों से फीड होने वाले क्षेत्रों को मिलाकर एक आईलैण्ड सब-सिस्टम बनाया गया। इसके पश्चात् इस आईलैण्ड सब-सिस्टम में ब्लैक आउट की स्थिति निर्मित की गई। इस तरह एक बनावटी बिजली संकट छुरीखुर्द, जमनीपाली एवं कोरबा क्षेत्र में निर्मित किया गया। इसके पश्चात् इंजीनियरों की टीम ने युद्धस्तर पर बिजली संकट क्षेत्र में बिजली बहाली की प्रक्रिया प्रारंभ की। इसके लिये बांगो में उपलब्ध डीजल जनरेटर सेट से बंद जल विद्युत इकाई क्रमांक-3 को सर्विस में लेकर बांगो उपकेन्द्र के बस को चार्ज किया गया।

कलेक्ट्रेट परिसर में थूवोनजी कमेटी को किया सम्मानित, स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग के तहत दिया सम्मान

कलेक्टर सुभाष द्विवेदी ने कहा- स्वच्छता के प्रति जागरूक रहना सभी का कर्त्तव्य है

अशोक नगर (विश्व परिवार)। कलेक्ट्रेट भवन में अशोक नगर कलेक्टर सुभाष कुमार द्विवेदी द्वारा मध्य भारत के सबसे बड़े तीर्थ अतिशय क्षेत्र दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी को पर्यावरण स्वच्छता अभियान के लिए जिले के प्रमुख अधिकारीयों के समकक्ष कमेटी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल महामंत्री विपिन सिंघई अशोक नगर जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल मंत्री विजय धुर्रा को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया

इस दौरान जिला पंचायत सी ई ओ डां नेहा जैन ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र में स्वच्छता को बढ़ाने के लिए कार्य कर रहे सभी संस्थाओं समितियों को ग्रीन लीफ रेटिंग सिस्टम के तहत आज माननीय कलेक्टर महोदय द्वारा सम्मानित किया जा रहा है जिसमें जिले की दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी यहां उपस्थित थे कमेटी के पदाधिकारियों माननीय कलेक्टर महोदय से प्रस्शति पत्र प्राप्त करेंगे।

जीवन में स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता ज़रूरी है : इस दौरान कलेक्टर श्री सुभाष कुमार द्विवेदी ने कहा कि जीवन में स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता की आवश्यकता है आप सभी को इस दिशा में अच्छी तरह से काम करना है स्वच्छता के साथ साफ सफाई हम सब की ज़िम्मेदारी है आज दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी सहित जिन्हें सम्मानित किया जा रहा है वे और भी उत्साह से आगे काम करते रहेंगे इस दौरान जिले भर के अधिकारी कलेक्टर भवन में विशेष रूप से उपस्थित थे इस दौरान थूवोनजी कमेटी ने दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी में विशेष रूप वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ कलेक्टर महोदय व जिला पंचायत सी ई ओ के अतिथि में करने हेतु आमंत्रित दिया जिसे उन्होंने सुइकार कर लिया।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर मंगलवार 16 जुलाई 2024

संक्षिप्त समाचार

एक लाख के पांच माओवादी चढ़े पुलिस के हत्थे

बीजापुर(विश्व परिवार)। सुरक्षाबलों की संयुक्त कार्रवाई में गंगालूर क्षेत्र के मेटापाल से एक लाख के ईनामी सहित पांच नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार नक्सली हत्या, हत्या का प्रयास, आईईडी विस्फोट करने की घटना में शामिल थे। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक नक्सल विरोधी अभियान के दौरान डीआरजी व गंगालुर थाना की संयुक्त पार्टी मेटापाल व पुसनार की ओर अभियान पर निकली थी। अभियान के दौरान मेटापाल के जंगलों से एक लाख रुपये का ईनामी आरपीसी पुसनार अंतर्गत जनताना सरकार अध्यक्ष साई मंगू उर्फ मंगू कुंजाम निवासी मेटापाल, कटेकल्याण एरिया कमेटी छात्रसंघ अध्यक्ष महेश कुरसम उर्फमनकू निवासी पटेलपारा सावनार, पुसनार आरपीसी मिलिशिया प्लाटून कमाण्डर लालू पोटाम उर्फ श्यामलाल निवासी मेटापाल, पुसनार आरपीसी सेक्सन मिलिशिया प्लाटून कमाण्डर फुल्की पुनेम उर्फ सेप्पी निवासी मेटापाल तथा मेटापाल भूमकाल मिलिशिया सदस्य धन्नू पुनेम उर्फ बुईया निवासी नयापारा मेटापाल शामिल हैं। पकड़े गए नक्सली 5 मार्च 2022 को गंगालुर थाना क्षेत्र के पुसनार व टेकामेटा के जंगल में पुलिस पार्टी पर हमला करने की घटना में शामिल थे।

आधी रात चाकूबाजी में युवक की मौत

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले में एक बार फिर से चाकूबाजी की घटना हुई है। इतवारी बाजार में देर रात एक नाबालिग ने एक युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी. घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है. घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और मर्ग कायम कर जांच में जुट गई है. वहीं पुलिस ने हत्या करने वाले नाबालिग आरोपी को गिरफ्तार में कर लिया है. जानकारी के अनुसार, इतवारी बाजार के पास शनिवार की रात कोष्टापारा निवासी रोशन पटेल नामक युवक को किसी विवाद पर एक नाबालिग ने चाकू मारकर घायल कर दिया. जिसके बाद गंभीर रूप से घायल रोशन को हॉस्पिटल में भर्ती किया गया. लेकिन इलाज के दौरान ही घायल युवक की मौत हो गई. मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने नाबालिग आरोपी को हिरासत में ले लिया है और आगे की कार्रवाई कर रही है. मृतक मानसिक रूप से कमजोर बताया जा रहा है।

बासी खाना खाकर गायें हो रही बीमार, एक गाय मौत

रामानुजगंज(विश्व परिवार)। नगर के लरंगसाय कम्युनिटी हॉल, आमंत्रण धर्मशाला में लगातार शादियों हो रही है वही शादियों में खाना की व्यवस्था केटर्स संभाल रहे हैं। रात्रि 12 से 1 बजे तक खाना खाने का दौर चलता है जिसके बाद बचा खाना नदी किनारे फेंक दिया जा रहा है। जिसे खाकर गाय बीमार पड़ रही है बचा खाना खाने से एक गाय की मौत भी हो गई है। गौरतलब है कि नगर के वार्ड क्रमांक 9 में स्थित लरंगसाय कम्युनिटी हाल एवं आमंत्रण धर्मशाला में रामानुजगंज के साथ-साथ आसपास के गांव के लोग भी शादी समारोह करने के लिए इस बुक करते हैं यहां तक की झारखंड सरहदी गांव के आसपास के लोग भी यही आकर शादी करना पसंद कर रहे हैं परंतु बड़ी लापरवाही तब हो रही है जब शादी तो ढंग से संपन्न हो जा रहा है परंतु देर रात जो खाना बच रहा है उसे नदी किनारे फेंक दे रहे हैं।जिसे खाकर गौवंश बीमार पड़ रही है वहीं मौत भी हो रही है बीते दिनों भी ऐसे ही खाना नदी किनारे फेंक दिया गया था। जिसे खाकर वार्ड क्रमांक 8 निवासी सत्यम गुप्ता की गाय की मौत हो हो गई शनिवार के शाम को गाय बीमार पड़ी जिसका इलाज कराया गया परंतु वह नहीं बच सकी। घर में खाना बनता था तो पहले बाट देते थे, अब कैटर्स वाले फेंक देते हैं..... शादियों में पहले घरों में ही खाना बनता था जो खाना जब बचता था तो उसे बांट दिया जाता था।

हिंदू युवक बनकर मुस्लिम युवक ने लूटी अस्मत

केशकाल(विश्व परिवार)। पीड़िता के साथ इंस्टाग्राम में हिंदू युवक बन नाम बदलकर दोस्ती कर शादी का झांसा देकर बलात्कार करने वाले फरार आरोपी को फरसगांव पुलिस ने उत्तरप्रदेश, कानपुर नगर से गिरफ्तार किया। पूछताछ में युवक मुस्लिम निकला। पुलिस के अनुसार पीड़िता ने 16 जून को थाना आकर लिखित आवेदन देकर रिपोर्ट दर्ज कराई कि जुलाई 2023 में इंस्ट्राग्राम के माध्यम से एक लडक़ा का परिचय हुआ जो अपना नाम अजय समरथ बताया था। फिर थोड़ी दिन के बाद मोबाईल नम्बर शेयर किये थे। दोनों पीड़िता को शादी करूंगा कहकर अक्टूबर 2023 में पीड़िता के घर आया और पीड़िता के साथ जबरदस्ती कई बार बलात्कार किया है। प्रार्थिया की रिपोर्ट पर धारा 376, 417 भादवि. कायम कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण की गंभीरता एवं संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पुलिस अफसरों के मार्गदर्शन में फरार आरोपी के मोबाईल नम्बर के सी.ए.एफ, कॉल डिटेल के आधार पर फरसगांव पुलिस टीम कानपुर नगर उत्तरप्रदेश रवाना हुई।

मुख्यमंत्री की पहल पर लोगों को मिल रहा समस्याओं के त्वरित समाधान: भोजराज नाग

जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर में शामिल हुए सांसद-विधायक

कोंडागांव(विश्व परिवार)। आम जनता की समस्याओं का समाधान करने और शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने के लिए केशकाल विकासखंड के ग्राम धनोरा में शनिवार को जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कांकेर लोकसभा सांसद भोजराज नाग और केशकाल विधायक नीलकंठ टेकाम शामिल हुए। आयोजित शिविर में सुगमता के लिए विभाग वार स्टाल लगाए गए थे, ताकि लोगों को किसी भी प्रकार के परेशानियों का सामना न करना पड़े। साथ ही विभागों द्वारा सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी बताते हुए उन योजनाओं का लाभ कैसे ले सकते हैं इसकी विस्तृत जानकारी दी गई। शिविर के दौरान सांसद भोजराज नाग ने केंद्र और राज्य की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए सभी अधिकारियों को लोगों की समस्याओं का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने राज्य सरकार की इस पहल की सराहना की और बताया कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देशानुसार इस जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिससे लोगों की समस्याओं का समाधान उनके अपने ही क्षेत्र में होगा। जलवायु परिवर्तन का जिक्र करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी की पहल 'एक पेड़ माँ के नाम' के तहत सभी से पेड़ लगाने की अपील की और उसका देखभाल करने के लिए भी कहा। विधायक नीलकंठ टेकाम ने बताया कि सरकार के छः महीने के कार्यकाल में विभिन्न प्रयासों से जनता से जुड़ने की कोशिश की गई है ताकि सरकार की योजनाओं का सीधा लाभ लोगों तक पहुँचे। केशकाल के पूर्व विधायक सेवक राम नेताम ने कहा कि यह शिविर केशकाल क्षेत्र का पहला शिविर है और यह वतर्मान सरकार के प्रयास से संभव हुआ है जहाँ प्रशासन लोगों के पास आकर उनके समस्याओं को हल कर रही है। कलेक्टर कुणाल दुदावत ने इस अवसर पर कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार आज जिले में तीसरा जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अंतिम व्यक्ति तक शासन प्रशासन की योजनाओं को पहुँचाने के लिए संपूर्णता अभियान की शुरुआत हो चुकी है। हम लगातार प्रधानमंत्री जी के निर्देश में एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पेड़ लगा रहे हैं। शिविर में जो आवेदन आये हैं उसका त्वरित निराकरण किया जाएगा। शिविर में विभिन्न योजनाओं के तहत सामग्री का वितरण किया गया।

स्वर्गीय वरिष्ठ पत्रकार ठाकुर दिलीप सिंह ठाकुर को पत्रकारों ने दी श्रद्धांजलि

ग्रामीण क्षेत्रों की पत्रकारिता में था बड़ा नाम

जगदलपुर(विश्व परिवार)। बस्तर जिला पत्रकार संघ के वरिष्ठ सदस्य और वरिष्ठ पत्रकार ठाकुर दिलीप सिंह को पत्रकारों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई । रविवार को नयापारा स्थित पत्रकार भवन में शोक सभा का आयोजन किया गया।सभा में बस्तर के पत्रकारों ने स्वर्गीय ठाकुर दिलीप सिंह के छायाचित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। ठाकुर दिलीप सिंह के साथ बिताए हुए लम्हों और उनकी पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गए कार्यों को भी याद किया गया।13 जुलाई की सुबह ठाकुर दिलीप सिंह का आकस्मिक निधन हो गया था। उनके निधन से न केवल पत्रकार जगत में दुख व्याप्त है बल्कि उनके चाहने वालों को भी गहरा दुख पहुंचा है। बस्तर जिला पत्रकार संघ भवन में आयोजित शोक सभा में वरिष्ठ पत्रकार संजीव पचौरी ने ठाकुर दिलीप सिंह को याद करते हुए कहा की 1988 में ठाकुर दिलीप सिंह उनके अखबार से जुड़े और उन्होंने ग्रामीण पत्रकारिता के क्षेत्र में महारत हासिल की। ठाकुर दिलीप सिंह को ग्रामीण इलाकों की अच्छी जानकारी थी। वे प्रतिदिन अच्छी-अच्छी खबरें निकालकर लाया करते थे और बाकायदा उनके नाम से प्रकाशित किया जाता रहा है।वरिष्ठ पत्रकार दिलशाद नियाजी बताते हैं की वे मिड इंडिया नाम की एक मैगजीन निकाला करते थे। जिसके संपादक ठाकुर दिलीप सिंह को बनाया गया था। उन्होंने न केवल तत्कालीन मध्य प्रदेश में अपितु पूरे उत्तर भारत में उसका प्रचार प्रसार किया बल्कि मैगजीन की पाठक संख्या भी बढ़ा। वे बताते हैं कि जब भी उनका जन्मदिन होता है सबसे पहले ठाकुर दिलीप सिंह पहुंचते थे। आज ठाकुर दिलीप सिंह हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी यादें हमेशा हमारे मेरे दिल में रहेंगी। बस्तर के वरिष्ठ पत्रकार सुधीर जैन ने ठाकुर दिलीप सिंह को याद करते हुए कहा कि वह संघ संगठन के कार्यों को लेकर भी काफी संवेदनशील थे। कई मौके ऐसे आए जहां ठाकुर दिलीप सिंह के साथ वे भ्रमण किया करते थे। खासकर ग्रामीण इलाकों की रिपोर्टिंग कर ठाकुर दिलीप सिंह उनसे संपर्क किया करते थे और उनकी खबरें लगाई जाती थी।बस्तर जिला पत्रकार संघ के पूर्व अध्यक्ष और वरिष्ठ पत्रकार एस.करीमुद्दीन ने बताया कि उनके कार्यालय में ग्रामीण इलाकों के काफी लोग आते हैं।

आबकारी टीम बिलाईगढ़ ने 8.040 किलोग्राम गांजा पकड़ा

गांजा के तस्करी के दौरान उपयोग में लाए बाइक जप्त

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। आबकारी आयुक्त सह सचिव आर संगीता और कलेक्टर धर्मेश साहू के निर्देश एवं जिला आबकारी अधिकारी सोनल नेताम के मार्गदर्शन में गत दिवस हरिशंकर साहू पिता रामकृपाल और वाकेश्वर वर्मा पिता शोभित, दोनो निवासी ग्राम मल्दी थाना बिलाईगढ़ को मादक पदार्थ गांजा के अवैध तस्करी करते पकड़ा गया। गांजा के तस्करी के दौरान उपयोग में लाए बाइक को जप्त किया गया। मुखबिर से मिली सूचना की आबकारी विभाग वृत्त बिलाईगढ़ को सूचना जांच में पुष्टि होने के पश्चात मुखबिर सूचना पंचनामा तैयार किया गया तथा जिला आबकारी अधिकारी को फोन पर इस संबंध में सूचित करते हुए गवाहों को नोटिस देकर आबकारी टीम के साथ बताए गए स्थान पर तत्काल उपस्थित हुए। मल्दी रामपुर मार्ग में एक संदिग्ध दो पहिया वाहन आता दिखा हमारे वाहन को आता देख वाहन चालक द्वारा वाहन को मोड़कर वापस भागने का प्रयास किया जिसे दौड़ा कर रुकवाया गया एवं गवाहों के समक्ष दोनों संदेहियों से पूछताछ की गई तथा इनके पास में काले रंग के बैग की विधिवत रूप से तलाशी ली गई तलाशी में बैग से कुल 08 नग झिल्ली में अच्छी तरह से भरा पत्ती नुमा बीज युक्त पदार्थ को बरामद किया गया बरामद मादक पदार्थ का मौके पर ही प्राथमिक रूप से जांच करने पर गांजा होना पाया गया द्य स्थानीय तौलक के माध्यम से गांजे का तौल करवाया गया जिसका कुल वजन 8.040 किलोग्राम का होना पाया गया है।

नियम कानून का पालन नहीं करने वाले प्रायवेट स्कूलों की मान्यता रद्द होगी : कलेक्टर धर्मेश साहू

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर धर्मेश साहू ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में शिक्षा का अधिकार (आरटीई) के क्रियान्वयन की समीक्षा बैठक ली। बैठक में कलेक्टर धर्मेश साहू ने अधिकारियों को कहा कि यह पता करें कि शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत जिले के प्रायवेट स्कूलों में पढ़ रहे कितने बच्चों ने उस स्कूल से छुड़वाकर दूसरे स्कूल में दाखिला लिया है। उस प्रायवेट स्कूल को छोडऩे का कारण क्या है। यदि बच्चे और उसके पालक ने निजी कारणवश उस स्कूल से बेहतर सरकारी या निजी स्कूल में दाखिला लिया है तो ठीक है। कलेक्टर ने जिले के प्रायवेट स्कूलों को सख्त हिदायत देते हुए कहा कि कोई भी प्रायवेट स्कूल फीस का निर्धारण नियम अनुसार करेंगे। साथ ही किसी एक दुकान से ड्रेस और कॉपी किताब खरीदने के लिए विद्यार्थियों को बाध्य नहीं करेंगे। इसी प्रकार यदि प्रायवेट स्कूल आरटीई के तहत दाखिल बच्चों के साथ लापरवाही करते। बच्चे को शारीरिक, मानसिक रूप से परेशान करते हैं तो इन सभी परिस्थितियों की जांच में किसी निजी स्कूल द्वारा ऐसा किया जाना पाया जाता है तो उस स्कूल के विरुद्ध मान्यता रद्द करने की कार्यवाही किया जाएगा। बैठक में परियोजना निदेशक पंचायत हरिशंकर चौहान, जिला शिक्षा अधिकारी वर्षा बंसल, बीईओ नरेश जांगड़े, रेशम लाल कोसले और सत्यनारायण साहू सहित सेजेस के नोडल अधिकारी एवं प्राचार्य नरेश चौहान, समग्र शिक्षा के जिला नोडल अधिकारी शोभाराम पटेल, शिक्षक एस आर अजय सहित जिले के अन्य अधिकारी, प्राचार्य और शिक्षक उपस्थित थे।

टीचर्स को अनिवार्य रूप से लिखनी है डेली डायरी, छात्रों की हाजिरी हो शत-प्रतिशत

जगदलपुर(विश्व परिवार)। बस्तर जिले में शिक्षा व्यवस्था को प्रभावी बनाने हेतु स्कूलों की सघन मॉनिटरिंग के तहत बलिराम बघेल जिला शिक्षा अधिकारी ने पीएम श्री आदर्श स्कूल कंगोली माध्यमिक शाला नेगानर प्राथमिक शाला मगनर हायर सेकेंडरी स्कूल नेगानार कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय दर्भा ,माध्यमिक शाला दरभा के स्कूलों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बच्चों से चर्चा की एवं कक्षा अवलोकन भी किया। स्कूलों में जो भी कमियां दिखाई उसे तत्काल दूर करने हेतु प्रधानाध्यापक, प्राचार्य को निर्देशित किया गया। जो बच्चे स्कूल में अनुपस्थित है उनके पालकों से संपर्क कर उनकी उपस्थिति शत प्रतिशत सुनिश्चित करने कहा । इसके साथ ही पाठ्य पुस्तक ,गणवेश के वितरण स्थिति की जानकारी ली। शिक्षकों को अप्रवेशी एवं शाला त्यागी जो बच्चों को तत्काल प्रवेश कर जानकारी उपलब्ध कराने की निर्देश दिए गए। शिक्षकों को अध्यापक डेली डायरी प्रतिदिन लिखने के भी निर्देश दिया गए। जिससे कार्ययोजना अनुरूप कक्षा अध्यापन किया जा सके । स्वच्छ का प्रशिक्षण सभी प्राथमिक शाला के शिक्षकों ने प्राप्त किया है प्रशिक्षण में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान की क्वालिटी पूर्वक शिक्षा किस प्रकार दी जा सके,यह अवगत कराया गया है। बलवाड़ी में निर्धारित लक्ष्य के बच्चों को शत प्रतिशत प्रवेश देते हुए उन्हें दो घंटा अध्यापन कराने हेतु अधिकृत शिक्षकों से भी चर्चा कर रचनात्मक ढंग से अध्यापन हेतु प्रेरित किया गया है । सभी शिक्षक को शाला समय का कड़ाई से पालन करने कहा गया। किचन गार्डन बनाने तथा बच्चों की उपस्थिति कम होने पर नाराजगी प्रकट करते हुए प्राचार्य एवं प्रधानाध्यापक को शत प्रतिशत उपस्थित बच्चों की सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

समाज में शांति स्थापना में न्याय की महत्वपूर्ण भूमिका: न्यायमूर्ति जयसवाल

कोंडागांव में आयोजित नेशनल लोक अदालत में शामिल हुए उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति

कोंडागांव(विश्व परिवार)। कोंडागांव में आयोजित नेशनल लोक अदालत के कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति संजय कुमार जयसवाल ने समाज में शांति की स्थापना में न्याय की महत्वपूर्ण भूमिका बताई। शनिवार को आयोजित नेशनल लोक अदालत कार्यक्रम में शामिल जयसवाल ने न्याय की महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तार से चर्चा की और अदालती सुधारों के प्रति अपना समर्पण व्यक्त किया। कार्यक्रम की शुरुआत में न्यायमूर्ति संजय कुमार जयस्वाल ने न्याय के महत्व और उसकी आवश्यकताओं पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा, न्याय व्यवस्था समाज की नींव होती है और इसका सुदृढ होना अत्यंत आवश्यक है। लोक अदालतें आम जनता को न्याय दिलाने का एक सशक्त माध्यम हैं और इससे अदालती मामलों का त्वरित समाधान संभव होता है। उन्होंने लोक अदालतों की भूमिका की प्रशंसा की और उन्हें और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव भी दिए। न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि लोक अदालतें न केवल विवादों को सुलझाने का एक साधन हैं, बल्कि यह समाज में शांति और स्थिरता लाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी हैं। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी को न्याय सुलभ हो और अदालती प्रक्रियाएँ सरल और त्वरित हों। उन्होंने अदालती सुधारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई और न्यायपालिका में सुधार के लिए उठाए जा रहे कदमों की जानकारी दी। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्र से आए विशेषज्ञ और कानूनी विशेषज्ञ भी मौजूद रहे। उन्होंने लोक अदालत की प्रक्रिया और इसके प्रभावों पर अपने विचार साझा किए। कई विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि लोक अदालतें न केवल विवादों का समाधान करती हैं बल्कि समाज में न्याय के प्रति विश्वास को भी मजबूत करती हैं। कार्यक्रम के दौरान कई महत्वपूर्ण मामलों का निपटारा किया गया। जनता ने भी इस पहल की सराहना की और इसे सफल बनाने में अपना सहयोग देने का संकल्प लिया। कोंडागांव में आयोजित इस नेशनल लोक अदालत ने न्याय प्रणाली के प्रति आम जनता के विश्वास को और मजबूत किया है। इस प्रकार के आयोजनों से न केवल विवादों का त्वरित निपटारा होता है बल्कि समाज में न्याय और शांति की स्थापना भी होती है। इस अवसर पर आयोजित किए गए विभिन्न सत्रे में न्यायमूर्ति संजय कुमार जयसवाल और अन्य कानूनी विशेषज्ञों ने जनता को उनके अधिकारों और अदालती प्रक्रियाओं के बारे में जागरूक किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि न्याय की प्राप्ति सभी का अधिकार है और इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिए। नेशनल लोक अदालत का यह कार्यक्रम कोंडागांव में न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर मंगलवार 16 जुलाई 2024

व्यापार समाचार

जून में भारत में थोक मूल्य सूचकांक 16 महीने के उच्चतम स्तर पर -आम जनता की जेब पर काफी असर देखने को मिला है

कमल नैन नारंग

नई दिल्ली। देश में थोक मुद्रास्फीति बढ़ गई है, जिससे आम जनता की जेब पर काफी असर देखने को मिला है। जून में मुद्रास्फीति बढ़कर 3.36 प्रतिशत पर पहुंच गई है। ये आंकड़ा बीते 16 महीने का उच्चतम स्तर है। वाणिज्य मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों में ये बात सामने आई है.

खाद्य वस्तुओं, विशेषकर सब्जियों और विनिर्मित वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण यह वृद्धि हुई है। यह लगातार चौथा महीना था जब मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी देखी गई। मई में थोक मूल्य सूचकांक (WPI) आधारित मुद्रास्फीति 2.61 प्रतिशत थी। जून 2023 में यह (-) 4.18 प्रतिशत थी। फरवरी 2023 में थोक मुद्रास्फीति 3.85 प्रतिशत के उच्च स्तर पर पहुंच गई थी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने सोमवार को एक बयान में कहा, जून, 2024 में मुद्रास्फीति की सकारात्मक दर मुख्य रूप से खाद्य पदार्थों, खाद्य उत्पादों के विनिर्माण, कच्चे पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, खनिज तेल, अन्य विनिर्माण आदि की कीमतों में वृद्धि के कारण है। आंकड़ों के अनुसार, खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति जून में 10.87 प्रतिशत बढ़ी, जबकि मई में यह 9.82 प्रतिशत थी। जून में सब्जियों की महंगाई दर 38.76 प्रतिशत रही, जो मई में 32.42 प्रतिशत थी। प्याज की महंगाई दर 93.35 प्रतिशत रही, जबकि आलू की महंगाई दर 66.37 प्रतिशत रही। जून में दालों की महंगाई दर 21.64 प्रतिशत रही। माह के दौरान अन्य खाद्य वस्तुओं जैसे फलों की मुद्रास्फीति 10.14 प्रतिशत, अनाज की 9.27 प्रतिशत तथा दूध की 3.37 प्रतिशत रही। प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक मई की तुलना में जून में WPI में 0.39 प्रतिशत की वृद्धि हुई. पिछले छह महीनों के महीने-दर-महीने परिवर्तन से पता चलता है कि सूचकांक जनवरी में -0.40 प्रतिशत, फरवरी में 0.00 प्रतिशत, मार्च में 0.13 प्रतिशत, अप्रैल में 0.99 प्रतिशत, मई में 0.26 प्रतिशत और जून में 0.39 प्रतिशत था. !

30 जुलाई को लॉन्च हो रहे रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी में एआई के साथ अल्ट्रा क्लियर कैमरा और मोनेट से प्रेरित डिज़ाईन होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय युवाओं का सबसे लोकप्रिय स्मार्टफोन ब्रांड, रियलमी 30 जुलाई, 2024 को भारत में रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी लॉन्च कर रहा है। इस स्मार्टफोन में मोनेट से प्रेरित सुंदर डिज़ाईन है और यह रियलमी की ओर से पहला एआई प्रोफेशनल कैमरा फोन होगा। बहुप्रतीक्षित रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी के डिज़ाईन के लिए रियलमी ने म्यूज़ियम ऑफ फाईन आर्ट्स, बोस्टन (एमएफए) के साथ गठबंधन किया है। इस सीरीज़ में रियलमी 13 प्रो 5जी और रियलमी 13 प्रो+ 5जी शामिल हैं। यह मोनेट से प्रेरित अद्वितीय सुंदरता का प्रदर्शन करती है। यह मोनेट गोल्ड, मोनेट पर्पल, और एमराल्ड ग्रीन कलर विकल्पों में उपलब्ध है। इस गठबंधन द्वारा कला व टेक्नोलॉजी का बेहतरीन फ्यूज़न किया गया है। रियलमी ने मोनेट की उत्कृष्ट कृतियों - ''हे-स्टैक्स'' और ''वाटर लिलीज़'' से प्रेरणा ली है। मिराकल शाईनिंग ग्लास के साथ ये डिवाईस मोनेट की कृतियों के लाईट एवं शैडो इफेक्ट को प्रदर्शित करती हैं, इसलिए बिल्कुल पोर्टेबल कलाकृतियों की तरह दिखाई देती हैं। भारत में रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी का लॉन्च स्मार्टफोन उद्योग में एक नई लहर लेकर आएगा। सोनी के साथ गठबंधन में 2024 का यह दूसरा नंबर सीरीज़ लॉन्च रियलमी की ओर से डीएसएलआर कैमरे जैसी क्षमताओं वाला पहला एआई प्रोफेशनल कैमरा फोन पेश करेगा। इसके कैमरा सिस्टम में ड्युअल सोनी सेंसर, सोनी लाईट-701 और लाईट-600 शामिल हैं, जो हाई डायनामिक रेंज के फोटो, रात में स्पष्ट शॉट, ऑप्टिकल जूम, और डिजिटल सुपरजूम जैसी क्षमताएं प्रदान करते हैं। एआई अल्ट्रा-क्लैरिटी फीचर और एआई हाईपर-रॉ एलगोरिद्म की मदद से इमेज की क्लैरिटी और डायनामिक रेंज काफी बढ़ जाती है। उद्योग में पहली विशेषताओं और एआई फीचर्स तथा मोनेट से प्रेरित सुंदर डिज़ाईन के साथ रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी 30 जुलाई, 2024 को लॉन्च होगी और स्मार्टफोन उद्योग में नए मानक स्थापित कर देगी। ज्यादा अपडेट और जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट और फ्लिपकार्ट तथा सोशल प्लेटफॉर्म्स रियलमी.कॉम, ट्विटर, फेसबुक और यूट्यूब देखते रहें।

थ्री एम पेपर बोर्ड्स लिमिटेड का रु. 39.83 करोड़ का आईपीओ खुला

मुंबई (एजेंसी)। 3 दशकों से अधिक समय से रिसाइकल्ड पेपर-आधारित कोटेड डुप्लेक्स बोर्ड उत्पादों के निर्माण के व्यवसाय में लगी हुई मुंबई स्थित कंपनी थ्री एम पेपर बोर्ड्स लिमिटेड अपने एसएमई आईपीओ के माध्यम से रु. 39.83 करोड़ तक जुटाने की योजना बना रही है। पब्लिक इश्यू 12 जुलाई को सब्स्क्रीप्शन के लिए खुला है और 16 जुलाई को बंद होगा। कंपनी के शेयर बीएसई लिमिटेड (बीएसई एसएमई) के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इस इश्यू के माध्यम से जुटाए गए धन का उपयोग व्यवसाय विस्तार के लिए किया जाएगा जिसमें मशीनरी खरीदना, फैक्ट्री निर्माण विस्तार, ऋणों का पुनर्भुगतान, कार्यशील पूंजी लगाना और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्य शामिल हैं। कम्फर्ट सिक्योरिटीज लिमिटेड इस इश्यू का बुक रनिंग लीड मैनेजर है। रु. 39.83 करोड़ के पब्लिक इश्यू में रु. 67-69 प्रति शेयर के प्राइज बैंड में रु.10 के 57,72,000 इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू शामिल है। कंपनी ने पूंजीगत व्यय के लिए रु. 14 करोड़ का उपयोग करने की योजना बनाई है, जिसमें प्लास्टिक-फायर्ड लॉ-प्रेशर्ड बॉयलर की खरीद भी शामिल है, जो बिजली उत्पादन के लिए वेस्ट प्लास्टिक का उपयोग करेगा और बिजली की लागत को काफी कम करेगा। यह धनराशि स्टोरेज क्षमता बढ़ाने के लिए फैक्ट्री बिल्डिंग विस्तार और उत्पादन गति बढ़ाने के लिए शीट कटर के अधिग्रहण का भी समर्थन करेगी। कार्यशील पूंजी के लिए रु. 10 करोड़ और टर्म लॉन पुनर्भुगतान के लिए रु. 7 करोड़ आवंटित किए जाएंगे। जिससे मैनेजमेन्ट सुचारू होगा, केश फ्लो मेनेजमेन्ट में सुधार होगा और ब्याज लागत कम होगी। शेष धनराशि का उपयोग सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों और इश्यू खर्च के लिए किया जाएगा। एप्लिकेशन के लिए न्यूनतम लॉट साइज 2,000 शेयर है जो प्रति एप्लिकेशन रु. 1.38 लाख के निवेश के बराबर है।

पाकिस्तान को हराकर भारत बना चैंपियन, युवराज सिंह ने यूनुस खान को दिया करारा जवाब

बर्मिंघम(एजेंसी)। वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स के खिताबी मंच पर युवराज सिंह की कप्तानी में रिटायर्ड भारतीय क्रिकेटरों की पलटन ने पाकिस्तान को ऐसा सबक सिखाया है कि अब वो चाहकर भी इसे भूल नहीं पाएगा। इंडिया चैंपियंस ने शनिवार को खेले गए रोमांचक फाइनल में पाकिस्तान को पांच विकेट से हराकर वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स का खिताब अपने नाम कर लिया। युवराज सिंह की अगुआई में टीम ने अपना दबदबा बनाए रखा और पाकिस्तान के खिलाफ कमबैक करते हुए ट्रॉफी अपने नाम की। इस जीत के साथ ही इंडिया चैंपियंस ने पाकिस्तान चैंपियंस को उसके एक बयान का करारा जवाब दे दिया। दरअसल, डब्ल्यूसीएल 2024 के ग्रुप स्टेज में हुई भारत-पाकिस्तान भिड़ंत में पाकिस्तान ने बड़े अंतर से जीत दर्ज की थी। इस जीत के बाद पाकिस्तानी कप्तान यूनुस खान खुशी में जरूरत से ज्यादा बोल गए थे। यूनुस खान ने कहा था कि भारत को हराकर उन्होंने बदला ले लिया। खान का बदला लेने से यहां मतलब टी20 विश्व कप 2024 में भारत के हाथों पाकिस्तानी टीम को मिली हार से जुड़ा था। ग्रुप स्टेज में भारत को हराने के बाद पाकिस्तान का अति आत्मविश्वास उन पर हावी होता दिखा। खिताबी मुकाबले में भारत को हल्के में लेते हुए पाकिस्तान चैंपियंस ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 156/6 का स्कोर बनाया। कामरान अकमल (19 गेंदों पर 24 रन) और मकसूद (12 गेंदों पर 21 रन) ने टीम को ठोस शुरुआत दी, लेकिन लगातार विकेट गिरने से टीम बड़ा टोटल सेट करने में विफल रही। शोएब मलिक ने बेहतरीन प्रदर्शन किया, उन्होंने 36 गेंदों पर 41 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली। कप्तान यूनुस खान अपनी छाप छोड़ने में विफल रहे और उन्हें इरफ़ान पठान ने 7 रन पर क्लीन बोल्ड कर दिया। इसके बाद मिस्बाह उल हक 18 रन बनाने के बाद रिटायर्ड हर्ट हो गए, सोहेल तनवीर (9 गेंद पर नाबाद 19 रन) के योगदान ने पाकिस्तान को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। भारतीय गेंदबाजों की बात करें तो, अनुरीत सिंह ने तीन विकेट लिए। विनय कुमार, पवन नेगी और इरफ़ान पठान ने 1-1विकेट लिया। जवाब में, इंडिया चैंपियंस ने रॉबिन उथप्पा (10) को जल्दी खोने के बावजूद अंबाती रायडू की 50 रनों की विस्फोटक पारी के जरिए टीम ने जीत की नींव रखी।

भारत 2031 तक बन सकता है दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था : आरबीआई डिप्टी गवर्नर

मुंबई (एजेंसी)। भारत की जीडीपी पूरी दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही है। अपनी मजबूत अर्थव्यवस्था के दम पर भारत 2048 में नहीं, बल्कि 2031 तक दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और 2060 तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। आरबीआई के डिप्टी गवर्नर माइकल देबब्रत पात्रा ने एक कार्यक्रम में ये बातें कहीं। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में अपने संबोधन में पात्रा ने कहा कि ऐतिहासिक तौर पर देखा जाए तो भारत में निवेश घरेलू बचत से होता है। 2021-23 की अवधि के दौरान सकल घरेलू बचत दर सकल राष्ट्रीय खर्च

योग्य आय का औसत 30.7 प्रतिशत रही है। अन्य देशों की तरह भारत में निवेश या वृद्धि के लिए दूसरे देशों पर निर्भर नहीं है। पात्रा ने आगे कहा कि बैलेंस ऑफ पेमेंट के तहत आने वाले करंट अकाउंट गैप में 2023-24 में जीडीपी का 1 प्रतिशत रह सकता है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के बाहरी खतरों का सामना करने में मदद करता है। भारत का सकल विदेशी कर्ज जीडीपी का 20 प्रतिशत बना हुआ है, जिसके लिए भारत के पास पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार मौजूद है। आगे उन्होंने कहा कि वित्तीय स्थिरता और महंगाई 4 प्रतिशत के आसपास आने के कारण भारत विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है। महंगाई का कम होना दिखाता है कि मौद्रिक नीतियों में लिए गए फैसलों का असर हुआ है। पात्रा ने आगे का कि राजकोषीय समेकन के कारण जनरल सरकारी कर्ज मार्च 2024 में जीडीपी का 81.6 प्रतिशत रहने का अनुमान है। आईएमएफ के अनुसार यह इस दशक के अंत तक गिरकर 78.2 प्रतिशत रह सकता है।

ज़िम्बाब्वे के ख़िलाफ़ पांचवें टी20 में भारत दे सकता है नए खिलाड़ियों को मौक़ा

हरार(एजेंसी)। भारत और ज़िम्बाब्वे के बीच आज पांचवां और अंतिम टी20 मैच हरारे स्पोर्ट्स क्लब में खेला जाएगा। भारत पहले ही इस सीरीज़ में 3-1 की अपराजेय बढ़त बना चुका है, लेकिन दोनों टीमें इस मुक़ाबले को जीतने के लिए ज़ोर लगाएंगी। सीरीज के पहले मैच में जीत हासिल करने के बाद ज़िम्बाब्वे अब तक एकजुट प्रदर्शन करने में क़ामयाब नहीं हो पाया है। बेहतरीन फ़ॉर्म में चल रहे, ज़िम्बाब्वे के कप्तान सिकंदर रज़ा चाहेंगे कि उनकी टीम एक जीत के साथ इस सीरीज़ का अंत करें लेकिन शुभमन गिल एंड कंपनी भी एक और जीत के लिए पूरी तरह से तैयार है। अगर ज़िम्बाब्वे इस मैच में

चाहता है तो उनके गेंदबाज़ों को सबसे पहले शुभमन गिल को आउट करने की ज़रूरत है। गिल ने इस सीरीज़ में 52.33 की बेहतरीन औसत से अब तक कुल 153 रन बनाए हैं। गिल काफ़ी सूझ-बूझ के साथ काफ़ी टिक कर बल्लेबाज़ी करने का प्रयास कर रहे हैं, और इससे भारतीय टीम को काफ़ी लाभ भी मिला है। भारतीय टीम ने चौथा मैच शनिवार को 10 विकेट से जीता था। वहीं ज़िम्बाब्वे अपने कप्तान सिकंदर रज़ा से एक और बेहतरीन प्रदर्शन की उम्मीद करेगा।

विंबलडन पुरुष युगल खिताब जीतकर भावुक हुए हेलियोवारा, पैटन के लिए भी ये जीत यादगार

लंदन(एजेंसी)। विंबलडन 2024 के पुरुष युगल का खिताब ब्रिटेन के हेनरी पैटन और फिनलैंड के हैरी हेलियोवारा की जोड़ी ने जीत लिया है। यह एक रोमांचक खिताबी मुकाबला था, जहां इस जोड़ी ने ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी को मात दी। हेलियोवारा और पैटन की जोड़ी ने ऑस्ट्रेलिया के मैक्स पर्सेल और जॉर्डन थॉम्पसन की जोड़ी को हराकर खिताब अपने नाम किया। हेलियोवारा और पैटन को 6-7(7), 7-6(8), 7-6 (11-9) से जीत दर्ज करने के लिए दो घंटे और 49 मिनट की कड़ी मेहनत करनी पड़ी। हेलियोवारा ने चोट के

कारण 11 साल पहले टेनिस खेलना बंद कर दिया था। इसके बाद उन्होंने चार साल से भी कम समय में एल्टन यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन और मास्टर डिग्री हासिल की और यात्री गाइड के रूप में सेवा करने के लिए हर सुबह 5 बजे हेलसिंकी एयरपोर्ट पर काम किया। उन्होंने 2017 में वापसी की और तब से सात टूर-स्तरीय युगल खिताब जीते हैं। हेलियोवारा और पैटन ने अप्रैल में पहली बार टीम बनाई और जल्द ही एक साझेदारी के रूप में घुलमिल गए। एटीपी खिताब जीतने के बाद, उन्होंने शनिवार के फाइनल में 32 मैचों में से 28 में जीत के साथ प्रवेश किया। 2012 में जोनाथन मैरे और 2023 में नील स्कूप्स्की के बाद वह ओपन युग के केवल तीसरे ब्रिटिश व्यक्ति बन गए हैं, जिसने यह ट्रॉफी जीती है। हेलियोवारा विंबलडन डबल्स जीतने वाले फिनलैंड के पहले पुरुष बन गए और जब उन्होंने और पैटन ने अपना दूसरा मैच प्वाइंट जीता तो वे अपने घुटनों पर गिरकर रोने लगे। पैटन पेशेवर युग में ऑल इंग्लैंड क्लब में पुरुष युगल जीतने वाले तीसरे ब्रिटिश पुरुष हैं, इससे पहले वे 2012 में जोनाथन मैरे और पिछले साल नील स्कूप्स्की के साथ जुड़ चुके हैं।

साई लाइफ साइंसेज लिमिटेड ने सेबी में दायर किया डीआरएचपी

साई लाइफ साइंसेज लिमिटेड (एसएलएसएल या कंपनी), ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। साई लाइफ साइंसेज वैश्विक फार्मास्युटिकल इनोवेटर कंपनियों और जैव प्रौद्योगिकी फर्मों को छोटे अणु नई रासायनिक संस्थाओं (एनसीई) के लिए दवा की खोज, विकास और विनिर्माण वैल्यू चेन में एंड-टू-एंड सेवाएं प्रदान करती है। कंपनी आईपीओ के तहत इक्विटी शेयर (अंकित मूल्य ?1 प्रत्येक) की पेशकश के जरिये धन जुटाने की योजना बना रही है। इस पेशकश में इस कुल 800 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयरों का ताजा निर्गम और विक्रय शेयरधारकों द्वारा 61,573,120 इक्विटी शेयरों की बिक्री की पेशकश शामिल है। साई लाइफ साइंसेज ने नए निर्गम से प्राप्त शुद्ध आय का इस्तेमाल इस तरह करने का प्रस्ताव किया है- (द्व) कंपनी द्वारा लिए गए सभी या कुछ बकाया उधारों का पूर्ण या आंशिक पुनर्भुगतान/पूर्व भुगतान, 600 करोड़ रुपये तक और (द्वद्व) सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए। रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस के माध्यम से पेश किए जाने वाले इक्विटी शेयरों को बीएसई लिमिटेड (बीएसई) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनएसई) में सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है। कोटक महिंद्रा कैपिटल कंपनी लिमिटेड, आईआईएफएल सिक्योरिटीज लिमिटेड, जेफ्रीज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और मॉर्गन स्टेनली इंडिया कंपनी प्राइवेट लिमिटेड इस इश्यू के बुक रनिंग लीड मैनेजर हैं।

एचडीएफसी बैंक परिवर्तन के कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से 3.25 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया

मुंबई (एजेंसी)। विश्व युवा कौशल दिवस पर, एचडीएफसी बैंक परिवर्तन को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि का जश्न मनाने पर गर्व है, जिसने अपने विभिन्न कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से पूरे भारत में 325,000 से अधिक युवाओं को जोड़ा है। कौशल विकास और आजीविका संवर्धन बैंक के परिवर्तन कार्यक्रम का एक प्रमुख फोकस क्षेत्र है, जो सभी सीएसआर पहलों के लिए इसका अम्ब्रेला ब्रांड है। बैंक वर्तमान में विभिन्न राज्यों में कौशल विकास के क्षेत्र में 100 से अधिक परियोजनाओं पर काम कर रहा है, जिसमें आईटी/आईटीईएस, खुदरा, स्वास्थ्य सेवा, विनिर्माण और कृषि सहित कई क्षेत्र शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 15 जुलाई 2014 में स्थापित, विश्व युवा कौशल दिवस युवाओं को रोजगार, सभ्य कार्य और उद्यमिता के लिए कौशल से लैस करने के साथ-साथ वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और सतत विकास को आगे बढ़ाने के रणनीतिक महत्व का जश्न मनाता है। कौशल विकास एक वैश्विक मांग है, और कौशल विकास में निवेश करना महत्वपूर्ण बना हुआ है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, वैश्विक स्तर पर 15-24 वर्ष की आयु के युवाओं की संख्या 1.2 बिलियन है। यह जनसांख्यिकी 2030 तक 1.3 बिलियन तक बढ़ने का अनुमान है, जो दुनिया की आबादी का 16 प्रतिशत है। भारत एक अद्वितीय स्थान रखता है, जहाँ कुल आबादी का 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा 25 वर्ष से कम आयु का है। हालांकि, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (ह्स्ष्ट) के हालिया डेटा से पता चलता है कि आईटी, स्वास्थ्य सेवा, विनिर्माण, कृषि और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे उच्च मांग वाले क्षेत्रों में कौशल की कमी है, जो देश के युवाओं को कौशल, अप-स्किल और सही कौशल प्रदान करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को रेखांकित करता है। एचडीएफसी बैंक परिवर्तन के युवा प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं को आज के गतिशील नौकरी बाजार में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और दक्षताओं से लैस करके इन जरूरतों को पूरा करते हैं। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (ह्स्ष्ट), सेक्टर स्किल काउंसिल या अन्य योग्य गैर-सरकारी एजेंसियों से प्रमाणपत्र के साथ आते हैं; और युवाओं को प्रमुख उद्योगों में सफल करियर और उद्यमशीलता के लिए तैयार करने के लिए लक्षित प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

वेविन ने भारत के टी20 वर्ल्ड कप विजेता कप्तान रोहित शर्मा को अपना ब्रांड एम्बेसडर बनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑर्बिया बिज़नेस एवं इनोवेटिव पाईपिंग समाधानों और एडवांस्ड वॉटर मैनेजमेंट सिस्टम्स में ग्लोबल लीडर, वेविन ने भारत के लिए रोहित शर्मा को अपना ब्रांड एम्बेसडर बनाया है, जिन्होंने हाल ही में देश को टी20 वर्ल्ड कप दिलाया। 60 सालों से ज्यादा समय के अनुभव के साथ वेविन उसी प्रकार परफॉर्मेंस और ड्यूरेबिलिटी के मानक स्थापित करता है, जैसे भारत के कप्तान और हिटमैन रोहित शर्मा करते हैं। वेविन पाईपिंग और वाटर स्टोरेज/मैनेजमेंट के विस्तृत समाधान प्रदान करता है। यह पिछले कुछ सालों से भारत में अपना काफी विस्तार कर चुका है। इसने विकसित होते देश की जरूरतों को पूरा करते हुए उद्योग के लिए मानक स्थापित कर दिए हैं। भारत में कंपनी दो ब्रांड्स, वेविन और वेक्टस पाईप्स का संचालन करती है और अपने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के उत्पादों द्वारा देश में ड्रेनेज और प्लम्बिंग की समस्याओं का समाधान करती है। कंपनी के पास शोध एवं विकास का दशकों पुराना इतिहास है। रोहित शर्मा और वेविन के बीच गठबंधन देश की जनता के साथ अपना जुड़ाव बढ़ाने के कंपनी के उद्देश्य के अनुरूप है, साथ ही, कंपनी रोहित शर्मा के करियर और छवि का प्रदर्शन करने वाली उत्कृष्टता की ओर अपनी प्रतिबद्धता को उजागर करना चाहती है। ऑर्बिया इंडिया के प्रेसिडेंट, श्री रणधीर चौहान ने कहा, ''सालों से वेविन भारत के विभिन्न शहरों और समुदायों में उच्च गुणवत्ता के प्लम्बिंग और ड्रेनेज सिस्टम उपलब्ध कराते हुए विकसित होते देश की जरूरतों को पूरा करने के लिए समर्पित है। हमें अब रोहित शर्मा को अपनी कंपनी का चेहरा बनाने की खुशी है। उन्हें अपने बेहतरीन प्रदर्शन के लिए देश के लाखों लोग प्यार करते हैं। इस गठबंधन से अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के समाधान और बेहतर उत्पाद प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है। हाल ही में भारत को ऐतिहासिक जीत दिलाने के बाद उनका व्यक्तित्व हमारे ब्रांड के मूल्यों से मेल खाता है और हम मिलकर एक मजबूत भावना का प्रदर्शन करते हैं, जो हमारे व्यवसाय की उत्कृष्टता के अनुरूप है।''

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

छत्तीसगढ़ शासन
सत्यमेव जयते

विष्णु के सुशासन से
सँवर रहा छत्तीसगढ़

समर्थन मूल्य और रकबा बढ़ा

3100 रुपए प्रति क्विंटल

की दर से
किसानों से 21 क्विंटल
प्रति एकड़ धान खरीदी

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से जुड़ने के लिए यह क्यूआर कोड स्कैन करें ...

श्री विष्णुदेव साय
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

SAMVAD- 40741/ 1

हमने बनाया है, हम ही सँवारेंगे

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in छत्तीसगढ़ जनसंपर्क